



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्रि

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 05 जनवरी 2026 • वर्ष 7 • अंक 25 • मूल्य: 5 रुपए

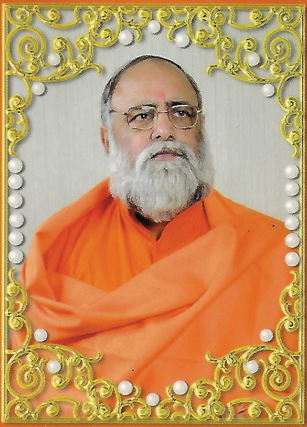
95 की उम्र में रिटायर हो रहे...



मां दुर्गा ने किया देवताओं का
मान मर्दन

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



प्रभु कृपा के आलोक से निर्धनता को सम्पन्नता में परिवर्तित किया जा सकता है। इस आलोक में मां लक्ष्मी की कृपाओं का वास है।

जिन असाध्य रोगों का इलाज इस जगत में नहीं है, वे रोग दिव्य पाठ से सहज दूर होते हैं। इस तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक जगत प्रमाणों के साथ स्वीकार कर रहा है।

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।



टैरिफ के दबाव में भारत का बड़ा फैसला

@ भारतश्री व्यूरो

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के एक बयान ने भारत-अमेरिका रिश्तों में एक बार फिर हलचल पैदा कर दी है। ट्रम्प ने दावा किया है कि भारत ने रूस से कच्चे तेल का आयात कम करने का फैसला उन्हें खुश करने के लिए लिया है। उनके इस बयान के बाद न केवल कूटनीतिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है, बल्कि भारत की ऊर्जा नीति और अमेरिका के साथ चल रहे टैरिफ विवाद पर भी नए सवाल खड़े हो गए हैं। ट्रम्प ने अपने बयान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करते हुए कहा कि मोदी “बहुत अच्छे इंसान” हैं और यह जानते थे कि वह इस मुद्दे पर खुश नहीं हैं। इसलिए भारत ने रूसी तेल की खरीद कम करने का फैसला लिया।

ट्रम्प का बयान और उसका संदेश

डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा, “वे मुझे खुश करना चाहते थे। प्रधानमंत्री मोदी बहुत अच्छे इंसान हैं। वह जानते थे कि मैं खुश नहीं था, इसलिए मुझे खुश करना जरूरी था। हम व्यापार करते हैं और हम उन पर टैरिफ बढ़ा सकते हैं।” इस बयान को सिर्फ एक व्यक्तिगत टिप्पणी नहीं, बल्कि रणनीतिक संदेश के तौर पर देखा जा रहा है। ट्रम्प यह साफ करना चाहते हैं कि अमेरिका की नाराजगी भारत के फैसलों को प्रभावित कर सकती है, खासकर जब बात रूस जैसे संवेदनशील मुद्दे की हो।

यूक्रेन युद्ध और भारत की ऊर्जा नीति

यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद वैश्विक ऊर्जा बाजार में बड़ा उलटफेर हुआ। पश्चिमी देशों ने रूस पर कड़े

प्रतिबंध लगाए, लेकिन भारत ने अपनी ऊर्जा जरूरतों को प्राथमिकता देते हुए रूस से तेल खरीद बढ़ा दी। युद्ध से पहले भारत रूस से बहुत कम मात्रा में तेल खरीदता था, लेकिन प्रतिबंधों के बाद रूस सस्ते दामों पर कच्चा तेल बेचने लगा। इसी का फायदा उठाकर भारत रूस का सबसे बड़ा तेल खरीदार बन गया। हालांकि अमेरिका और उसके सहयोगी देशों को यह फैसला रास नहीं आया। अमेरिकी अधिकारियों ने आरोप लगाया कि भारत रूस से तेल खरीदकर अप्रत्यक्ष रूप से यूक्रेन पर हो रहे हमलों को फंड कर रहा है।

भारतीय राजदूत की अपील और कूटनीतिक कोशिशें

इस टैरिफ के बाद भारत की ओर से कूटनीतिक स्तर पर लगातार कोशिशें की गईं। अमेरिकी सीनेटर लिंडसे ग्राहम ने खुलासा किया कि वह करीब एक महीने पहले भारतीय राजदूत विनय मोहन क्वात्रा के घर गए थे। इस मुलाकात में सबसे अहम मुद्दा भारत द्वारा रूसी तेल की खरीद कम करने का था। लिंडसे ग्राहम के मुताबिक, भारतीय राजदूत ने उनसे आग्रह किया था कि राष्ट्रपति ट्रम्प तक यह संदेश पहुंचाया जाए कि भारत पर लगाया गया अतिरिक्त 25 प्रतिशत टैरिफ हटाया जाए। ग्राहम ने यह भी कहा कि बातचीत में यह साफ दिखा कि भारत पहले के मुकाबले रूस से काफी कम मात्रा में तेल खरीद रहा है।

चार साल बाद बदली तस्वीर

भारत ने 2021 के बाद पहली बार रूस से कच्चे तेल का आयात घटाया है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, नवंबर में भारत रूस से करीब 17.7 लाख बैरल प्रति

दिन तेल खरीद रहा था, जो दिसंबर में घटकर लगभग 12 लाख बैरल प्रति दिन रह गया। जानकारों का कहना है कि आने वाले महीनों में यह आंकड़ा 10 लाख बैरल प्रति दिन से भी नीचे जा सकता है। जनवरी में आने वाले आंकड़े इस गिरावट को और साफ कर सकते हैं। इस बदलाव की एक बड़ी वजह नवंबर 2021 के बाद रूस की दो प्रमुख तेल कंपनियों-रोसनेफ्ट और लुकोइल-पर लगे अमेरिकी प्रतिबंध हैं। इन प्रतिबंधों के बाद रूस से तेल खरीदना भारत के लिए पहले जितना आसान और फायदेमंद नहीं रह गया।

रूस की घटती छूट और बढ़ता खर्च

यूक्रेन युद्ध के शुरुआती दौर में रूस ने 20 से 25 डॉलर प्रति बैरल तक की भारी छूट दी थी। उस समय अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत 130 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थी। ऐसे में रूस का सस्ता तेल भारत के लिए बेहद आकर्षक था। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत घटकर करीब 63 डॉलर प्रति बैरल रह गई है। साथ ही रूस ने भी अपनी छूट घटाकर सिर्फ 1.5 से 2 डॉलर प्रति बैरल कर दी है। इतनी कम छूट में रूस से तेल खरीदने का फायदा पहले जैसा नहीं रह गया।

भरोसेमंद सप्लायर्स की ओर वापसी

इन्हीं वजहों से भारत अब दोबारा सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका जैसे स्थिर और भरोसेमंद सप्लायर्स की ओर लौट रहा है। इन देशों से तेल खरीदना लॉजिस्टिक्स और भुगतान के लिहाज से आसान है और कीमतों में भी अब बहुत बड़ा अंतर नहीं बचा है।



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



टूटे धागों को जोड़ने का वक़्त 2026 में नई दिल्ली की कूटनीति की नई राह

पिछला साल भारत की कूटनीति के लिए एक ऐसा दौर था जब कई पुराने रिश्ते अचानक टूटने लगे। अप्रैल में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए हमले ने सब कुछ बदल दिया, जहां 26 लोग मारे गए और भारत ने पाकिस्तान पर आतंकवाद का इल्जाम लगाया। जवाब में भारत ने इंडस वाटर ट्रीटी को रोक दिया और 7 मई को 'ऑपरेशन सिंदूर' चलाकर पाकिस्तान और PoK में नौ आतंकी कैपों पर हवाई हमले किए, जिसमें कम से कम 100 आतंकी मारे गए। पाकिस्तान ने भी जवाबी कार्रवाई की, लेकिन 10 मई को सेना की हॉटलाइन से संघर्ष रुक गया। इस बीच अमेरिका ने खुद को शांति का श्रेय दिया, जिससे भारत-अमेरिका रिश्ते और खराब हो गए। बांग्लादेश के साथ भी तनाव बढ़ा, खासकर शेख हसीना के भारत आने के बाद। वहां अल्पसंख्यकों पर हमले हुए, भारत के मिशन पर पथराव किया गया और मुहम्मद यूनस जैसे नेताओं के बयानों ने पूर्वोत्तर भारत को निशाना बनाया। नेपाल में भी केपी शर्मा ओली सरकार के गिरने के बाद जनरल Z की विरोध प्रदर्शनों ने रिश्तों को ठंडा कर दिया, और चुनावों तक भारत की कोशिशें रुकी रहीं। ये घटनाएं दिखाती हैं कि कैसे छोटे-छोटे विवाद बड़े टकराव में बदल गए। भारत को लगा कि वह अकेला पड़ गया है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान को दोष देने वाले कम ही निकले। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की तरफ से पाकिस्तानी सेना प्रमुख से मिलने और संघर्ष रोकने का दावा करने से भारत को लगा कि उसके प्रयासों की कदर नहीं हो रही। ऊपर से आर्थिक दबाव भी बढ़ा, जब ट्रंप ने अगस्त में भारतीय सामानों पर 50 फीसदी टैरिफ लगा दिए, जिसमें रूसी तेल खरीदने पर 25 फीसदी का अतिरिक्त जुर्माना था। ये सब मिलकर 2025 को एक ऐसा साल बन गया, जहां भारत को अपनी सीमाओं की रक्षा तो करनी पड़ी, लेकिन वैश्विक समर्थन की कमी ने सबक सिखाया। अब सवाल यह है कि क्या ये टूटन नई मजबूती का आधार बनेगी?

चीन और रूस के साथ नई हवा: पुराने दुश्मनों से दोस्ती की कोशिश

2025 में सब कुछ बुरा नहीं था, खासकर चीन और रूस के साथ रिश्ते सुधरने से भारत को राहत मिली। चार साल के तनाव के बाद भारत-चीन सीमा पर शांति आई, और काइलाश मानसरोवर यात्रा फिर शुरू हो गई। वीजा नियम ढीले किए गए, सीधी उड़ानें बहाल हुईं और अगस्त में तियानजिन में शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन समिट के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात हुई। दोनों ने सीमा विवाद का निष्पक्ष हल ढूंढने और चुनौतियों से निपटने पर सहमति जताई। इससे पहले चीनी विदेश मंत्री वांग यी की दिल्ली यात्रा में सीमा शांति और व्यापार बढ़ाने के कदम उठाए गए। रूस के साथ तो रिश्ते और मजबूत हुए, दिसंबर में राष्ट्रपति पुतिन की यात्रा के दौरान पांच साल का व्यापार प्लान फाइनल हुआ, खासकर ऊर्जा क्षेत्र में। पश्चिमी दबाव के बावजूद भारत ने रूसी तेल की खरीद जारी रखी, जो महंगाई का बू करने में मददगार साबित हुआ। मालदीव और श्रीलंका

2025 का कड़वा सबक: पड़ोसियों से टकराव की आग

के साथ रिश्ते स्थिर हुए, जबकि अफगानिस्तान में काबुल में दूतावास दोबारा खोला गया और तालिबान के मंत्रियों ने दिल्ली का दौरा किया। कनाडा के साथ भी 2023 के निज्जर हत्याकांड वाले विवाद के बाद बातचीत सुधरी, और फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर जल्द चर्चा शुरू होने की उम्मीद है। ये बदलाव दिखाते हैं कि भारत पड़ोसियों के साथ संतुलन बनाने की कोशिश कर रहा है। लेकिन सवाल उठता है कि क्या ये सुधार टिकाऊ हैं? चीन के साथ आर्थिक निर्भरता तो है, लेकिन सुरक्षा चिंताएं बनी हुई हैं। रूस पर भरोसा अच्छा है, पर अमेरिकी नाराजगी इसे मुश्किल बना रही है। कुल मिलाकर, 2025 ने सिखाया कि दुश्मनी से ज्यादा फायदा दोस्ती में है, बशर्ते वह सतर्कता के साथ हो। अब 2026 में ये रिश्ते भारत की वैश्विक ताकत तय करेंगे।

अमेरिका का ठंडा रवैया: व्यापार और प्रवास की नई दीवारें

अमेरिका के साथ 2025 भारत के लिए सबसे बड़ा झटका साबित हुआ, जहां साल की शुरुआत अच्छी थी लेकिन अंत तक सब उलट गया। ट्रंप की दूसरी पारी में भारत को निशाना बनाया गया, खासकर व्यापार और प्रवास नीतियों में। अगस्त में 50 फीसदी टैरिफ लगने से भारतीय निर्यात पर ब्रेक लग गया, और रूसी तेल खरीदने पर अतिरिक्त 25 फीसदी का बोझ पड़ा, जबकि चीन और यूरोपीय संघ को छूट मिली। एच1बी वीजा फीस को 100,000 डॉलर करने से हजारों भारतीय आईटी प्रोफेशनल्स प्रभावित हुए। ट्रंप ने 60 से ज्यादा बार दावा किया कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान संघर्ष रोकने का जो भारत को पसंद नहीं आया क्योंकि वह तीसरे पक्ष की मध्यस्थता नहीं चाहता। पाकिस्तानी नेताओं से उनकी नजदीकी ने भारत को और चुभा। लेकिन भारत ने हार नहीं मानी, जुलाई में ब्रिटेन के साथ ऐतिहासिक फ्री ट्रेड एग्रीमेंट साइन किया, जिससे टैरिफ कम हुए और व्यापार बढ़ा। ओमान और न्यूजीलैंड के साथ भी बड़े व्यापार समझौते हुए। खाड़ी देशों के साथ ऊर्जा सुरक्षा मजबूत की गई, और इंडो-पैसिफिक में फोकस बढ़ा। ये कदम दिखाते हैं कि भारत अब एक देश पर निर्भर नहीं रहना चाहता। लेकिन चुनौती बनी हुई है, क्योंकि अमेरिका के बिना क्वाड जैसे गठबंधन कमजोर पड़ सकते हैं। 2025 ने सिखाया कि वैश्विक दोस्ती में स्वार्थ पहले आता है। अब सोचिए, अगर भारत अपनी सप्लाई चेन विविध बनाए तो क्या होगा? ये बदलाव न सिर्फ अर्थव्यवस्था को बचाएंगे, बल्कि भारत



को मजबूत बनाएंगे। कुल मिलाकर, अमेरिका का ठंडापन भारत को नई राह दिखा रहा है, जहां स्वायत्तता सबसे बड़ा हथियार है।

2026 की राह: व्यावहारिक कूटनीति का नया दौर

नया साल भारत के लिए एक मौका है पुरानी गलतियों से सीखने का, जहां कूटनीति अब ज्यादा व्यावहारिक और हित-आधारित होगी। 2026 में भारत कठोर गठबंधनों से हटकर लचीलापन अपनाएगा, खासकर बहुध्रुवीय दुनिया में। व्यापार विविधीकरण पर जोर होगा, ताकि एक बाजार पर निर्भरता न रहे, और कई देशों व ब्लॉक्स के साथ बातचीत तेज होगी। ऊर्जा सुरक्षा के लिए रूसी तेल की खरीद जारी रहेगी, भले ही अमेरिकी टैरिफ का दबाव हो, क्योंकि ये महंगाई और विनिर्माण को बचाएगा। चीन के साथ सतर्क पिछलाव जारी रहेगा, जैसे मोदी की SCO भागीदारी और यात्रा-व्यापार नियमों में ढील, लेकिन सुरक्षा चिंताओं को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। अमेरिका को मुख्य साझेदार माना जाएगा, लेकिन सप्लाई चेन और निर्यात गंतव्यों को विविध बनाया जाएगा, और व्यापार डील की उम्मीद बनी रहेगी। अफगानिस्तान के साथ कनेक्टिविटी बढ़ेगी, जबकि बांग्लादेश के साथ धैर्य रखा जाएगा ताकि लंबे समय में स्थिरता आए। श्रमिकों की गतिशीलता के लिए रूस और जापान जैसे देशों को निशाना बनाया जाएगा, अमेरिकी वीजा प्रतिबंधों से बचने के लिए। ये बदलाव भारत को अस्थिरता में मजबूत रखेंगे। लेकिन चुनौतियां भी हैं, जैसे चीन-पाकिस्तान का बढ़ता गठजोड़ और अमेरिका-रूस के बीच तनाव। दक्षिण एशिया में बांग्लादेश के चुनाव और नेपाल की नई सरकार रिश्तों को नया रंग दे सकती है। कुल मिलाकर, 2026

भारत के लिए परीक्षा का साल होगा, जहां स्वायत्तता और संयम से वह संतुलन बनाने वाला ताकतवर बनेगा। सवाल यह है कि क्या भारत ये मौके गंवाएगा या नई ऊंचाइयों को छुएगा?

दक्षिण एशिया का कल: स्थिरता या नई उलझनें?

दक्षिण एशिया 2026 में एक ऐसे मोड़ पर है जहां भारत की कूटनीति क्षेत्र की स्थिरता तय करेगी। पाकिस्तान के साथ तनाव कम होने की उम्मीद कम है, खासकर सऊदी अरब के साथ उसके रक्षा समझौते और चीनी हथियारों के बाद। लेकिन हॉटलाइन जैसे चैनलों से छोटे संघर्ष टल सकते हैं। बांग्लादेश में नई चुनौती हुई सरकार आने से रिश्ते सुधर सकते हैं, अगर भारत राजनीति को अर्थव्यवस्था से अलग रखे। अल्पसंख्यक सुरक्षा और पूर्वोत्तर के मुद्दों पर बातचीत से भरोसा बनेगा। नेपाल के मार्च चुनाव नई सरकार लाएंगे, जिसके बाद भारत की परियोजनाएं फिर शुरू हो सकती हैं। श्रीलंका और मालदीव के साथ स्थिरता बनी रहेगी, जो भारत को क्षेत्रीय लीडर बनाएगी। अफगानिस्तान में तालिबान के साथ सतर्क जुड़ाव से कनेक्टिविटी बढ़ेगी, जो व्यापार के नए रास्ते खोलेगा। लेकिन चीन का बढ़ता प्रभाव चिंता है, जो पड़ोसियों को अपनी तरफ खींच रहा है। भारत को अब 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति को मजबूत करना होगा, जहां आर्थिक मदद और सांस्कृतिक बंधन आगे आएंगे। वैश्विक स्तर पर, अगर भारत रूस-चीन के साथ संतुलन बनाए रखे, तो दक्षिण एशिया शांति का केंद्र बन सकता है। ये सब मिलकर दिखाते हैं कि स्थिरता आसान नहीं, लेकिन संभव है अगर भारत सक्रिय रहे। आखिर, एक मजबूत क्षेत्र ही भारत की वैश्विक महत्वाकांक्षाओं का आधार बनेगा।

नए साल के वादे: जनवरी का वो दूसरा शुक्रवार, जब टूट जाता है ज्यादातर जोश

उत्साह की लहर: नए साल पर वादे क्यों करते हैं हम?

नया साल आते ही हर कोई कुछ न कुछ बदलाव का सोचने लगता है। जिम जाना, ज्यादा पानी पीना, या धूम्रपान छोड़ना – ये वादे तो जैसे साल का हिस्सा बन जाते हैं। दुनिया भर में करीब 45 प्रतिशत लोग नए साल के वादे बनाते हैं, लेकिन ये उत्साह कहां से आता है? मनोविज्ञान कहता है कि ये एक तरह का नया मौका महसूस करने का तरीका है। साल खत्म होते ही पुरानी गलतियां भूलकर हम सोचते हैं कि अब सब कुछ नया होगा। ये फीलिंग हमें खुशी देती है, जैसे कोई साफ किताब खोलना। लेकिन सच्चाई ये है कि ये वादे ज्यादातर बड़े-बड़े होते हैं। कोई कहता है 'मैं 10 किलो वजन कम कर लूंगा', तो कोई 'हर रोज किताब पढ़ूंगा'। ये सपने अच्छे लगते हैं, पर हकीकत में इन्हें पूरा करना आसान नहीं। एक रिसर्च के मुताबिक, लोग वादे इसलिए बनाते हैं क्योंकि ये हमें कंट्रोल का अहसास देते हैं। साल के अंत में थकान और तनाव बढ़ जाता है, तो नया साल जैसे रीसेट बटन लगता है। लेकिन ये उत्साह ज्यादा दिनों तक नहीं टिकता। क्यों? क्योंकि हम बदलाव को कम आंकते हैं। आदतें बदलना आसान नहीं, इसमें समय लगता है। औसतन 66 दिन लगते हैं एक नई आदत बसाने में। फिर भी, हर साल करोड़ों लोग कोशिश करते हैं। भारत में भी, सोशल मीडिया पर New Year Resolution ट्रेंड करता है। लोग फिटनेस चैलेंज शेयर करते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों में ये पोस्ट बंद हो जाते हैं। ये वादे सिर्फ व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक दबाव भी बनाते हैं। दोस्त-रिश्तेदार पूछते हैं 'इस साल क्या प्लान है?', तो जवाब देना पड़ता है। लेकिन ये सवाल सोचने पर मजबूर करता है कि क्या वाकई हम बदलना चाहते हैं, या बस बहाव में बह रहे हैं? ये शुरुआती जोश हमें आगे ले जाता है, लेकिन जल्दी ही रुकावटें आती हैं। कुल मिलाकर, नए साल के वादे उम्मीद की किरण हैं, जो हमें बेहतर बनने का मौका देते हैं। लेकिन इन्हें टिकाऊ बनाने के लिए समझना जरूरी है कि ये क्यों टूटते हैं।

फेलियर की जड़ें: वादे टूटने के पीछे क्या छिपा है?

नए साल के वादे टूटना कोई नई बात नहीं। रिसर्च बताती है कि 80 प्रतिशत लोग फरवरी तक अपने वादे भूल जाते हैं। क्यों होता है ऐसा? सबसे बड़ा कारण है अवास्तविक लक्ष्य। हम सोचते हैं कि रातोंरात सब बदल जाएगा, लेकिन बदलाव धीरे-धीरे आता है। एक स्टडी कहती है कि लोग बड़े लक्ष्य बनाते हैं बिना प्लान के, जैसे 'साल भर जिम जाऊंगा' लेकिन जिम का समय या डाइट का इंतजाम नहीं सोचते। दूसरा, प्रेरणा का कम होना। शुरुआत में जोश होता है, लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी में थकान, काम का दबाव आता है तो वो जोश फीका पड़ जाता है। मनोविज्ञान में इसे 'विलपावर डिप्लेशन' कहते हैं, यानी इच्छाशक्ति सीमित होती है, जैसे मसल थक जाती



है। तीसरा, 'फॉल्स होप सिंड्रोम' – हम ज्यादा आशावादी हो जाते हैं। सोचते हैं कि ये बार ये तो हो जाएगा, लेकिन जब पहली असफलता आती है तो पूरा हार मान लेते हैं। इसके अलावा, आदतें पुरानी होती हैं, नई बनाना मुश्किल। ब्रेन पुराने रास्ते पर चलना पसंद करता है क्योंकि वो आसान लगते हैं। एक सर्वे में पाया गया कि ज्यादातर लोग वादे बनाते समय 'क्यों' नहीं सोचते। जैसे, वजन कम क्यों करना है? स्वास्थ्य के लिए या दिखने के लिए? अगर वजह मजबूत न हो तो टिकना मुश्किल। सामाजिक फैक्टर भी खेलता है। सोशल मीडिया पर सब परफेक्ट लगते हैं, तो हमारा फेलियर बड़ा लगता है। लेकिन सच्चाई ये है कि फेल होना सामान्य है। ये सीख देता है। भारत जैसे देश में, जहां परिवार और काम का बैलेंस मुश्किल है, वादे टूटना और आसान हो जाता है। कुल मिलाकर, ये कारण बताते हैं कि वादे टूटना हमारी कमजोरी नहीं, बल्कि समझ की कमी है। अगर हम छोटे कदम सोचें तो बात अलग हो सकती है। लेकिन ज्यादातर लोग ये गलतियां दोहराते रहते हैं, साल दर साल।

क्विटर्स डे का साथ: जनवरी का वो काला शुक्रवार

इस साल 2026 में, जनवरी का दूसरा शुक्रवार यानी 9 जनवरी, 'क्विटर्स डे' के नाम से जाना जाएगा। ये वो दिन है जब ज्यादातर लोग अपने नए साल के वादों को अलविदा कह देते हैं। एक फिटनेस ऐप स्ट्रैवा की 2019 की स्टडी से ये पता चला, और हर साल ये ट्रेंड जारी है। रिसर्च कहती है कि इस दिन तक 80 प्रतिशत लोग अपनी कोशिशें छोड़ देते हैं। क्यों? क्योंकि शुरुआती 10-12 दिन जोश रहता है, लेकिन उसके बाद रियलिटी सेट हो जाती है। जिम जाने वाले थक जाते हैं, डाइट फॉलो करने वाले चटपटे खाने की याद आती है। अमेरिका में करीब 9 प्रतिशत लोग ही पूरे साल वादे निभा पाते हैं। भारत में भी वैसा ही है – सोशल मीडिया पर जनवरी में फिटनेस पोस्ट

भरे पड़े हैं, लेकिन फरवरी तक सन्नाटा। क्विटर्स डे कोई आधिकारिक छुट्टी नहीं, बल्कि एक पैटर्न है जो डेटा से निकला। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि ये दिन इसलिए खास है क्योंकि ये वीकेंड से पहले आता है, जब लोग रिलैक्स मोड में चले जाते हैं। एक रिपोर्ट में कहा गया कि एक तिहाई लोग पहले महीने में ही हार मान लेते हैं। लेकिन अच्छी बात ये है कि ये दिन फेलियर का अंत नहीं। कई लोग इसे रीसेट पॉइंट मानते हैं। जैसे, अगर जिम छूट गया तो दोबारा शुरू करो। दुनिया भर में इस दिन पर आर्टिकल्स छपते हैं, जो लोगों को मोटिवेट करते हैं। लेकिन सवाल ये है कि क्या हम हर साल यही दोहराएंगे? क्विटर्स डे हमें याद दिलाता है कि बदलाव आसान नहीं। ये एक तरह का चेतावनी संकेत है। अगर हम पहले से तैयार रहें तो शायद ये दिन पार कर जाएं। कुल मिलाकर, 9 जनवरी 2026 को नजदीक आते ही सोचिए – क्या आपका वादा टिक जाएगा या भीड़ में शामिल हो जाएंगे?

मनोविज्ञान की कुंजी: क्विटर्स डे क्यों आकर्षित करता है असफलता?

क्विटर्स डे का मनोविज्ञान गहरा है। ये सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि हमारी दिमागी कमजोरी का आईना है। सबसे पहले, 'मोटिवेशन वेव' – शुरुआत में डोपामाइन हार्मोन बढ़ता है, जो खुशी देता है। लेकिन 10-14 दिन बाद ये कम हो जाता है, तो इच्छाशक्ति टूटने लगती है। मनोवैज्ञानिक इसे 'इंस्टेंट ग्रेटिफिकेशन' की तलाश कहते हैं। हम तुरंत रिजल्ट चाहते हैं, लेकिन बदलाव में समय लगता है। दूसरा, 'फॉल्स होप सिंड्रोम' यहां खेलता है। हम सोचते हैं कि नया साल जादू कर देगा, लेकिन जब रिजल्ट न दिखे तो निराशा होती है। एक स्टडी कहती है कि ये सिंड्रोम 50 प्रतिशत लोगों को प्रभावित करता है। तीसरा, विलपावर लिमिटेड रिसोर्स है। रोज छोटे-छोटे फैसले लेने से ये थक जाती है, तो बड़े वादे टिक नहीं पाते। इसके अलावा, प्रोक्रास्टिनेशन –

टालमटोल का शिकार हम सब हैं। क्विटर्स डे पर ये चरम पर पहुंच जाता है। ब्रेन पुरानी आदतों को प्रिफर करता है क्योंकि नई आदतें एनर्जी लेती हैं। लेकिन सकारात्मक पक्ष ये है कि समझने से हम इससे बच सकते हैं। अगर हम वादों को वैल्यू से जोड़ें, जैसे स्वास्थ्य के लिए न कि दिखावे के लिए, तो टिकने की संभावना बढ़ती है। भारत में, जहां स्ट्रेस लेवल हाई है, ये और मुश्किल हो जाता है। कुल मिलाकर, क्विटर्स डे का मनोविज्ञान बताता है कि असफलता सामान्य है, लेकिन सीख महत्वपूर्ण। ये हमें सिखाता है कि छोटे कदम और सेल्फ-कंपैशन से आगे बढ़ा जा सकता है। अगर हम दिमाग को समझें तो शायद अगला साल अलग हो।

नई राह: वादों को टिकाऊ बनाने के आसान तरीके

क्विटर्स डे आने वाला है, लेकिन हार मानने की जरूरत नहीं। वादों को मजबूत बनाने के लिए कुछ सरल उपाय अपनाएं। सबसे पहले, छोटे लक्ष्य बनाएं। 'हर रोज 10 मिनट वॉक' से शुरू करें, न कि 'मैराथन दौड़ना'। रिसर्च कहती है कि छोटे स्टेप्स 42 प्रतिशत ज्यादा सफल होते हैं। दूसरा, प्लान बनाएं। कैलेंडर में टाइम स्लॉट रखें, जैसे शाम 7 बजे जिम। तीसरा, ट्रैक रखें। ऐप्स यूज करें जो प्रोग्रेस दिखाएं, इससे मोटिवेशन बना रहता है। चौथा, 'क्यों' को याद रखें। जर्नल में लिखें कि ये बदलाव क्यों जरूरी है। अगर वजह मजबूत हो तो मुश्किल दिन भी पार हो जाते हैं। पांचवां, सपोर्ट सिस्टम बनाएं। दोस्तों से शेयर करें, वो चीयर करेंगे। अगर फिसलन हो तो जज न करें, रीसेट करें। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि सेल्फ-कंपैशन सफलता की कुंजी है। भारत में, जहां फैमिली सपोर्ट मिलता है, उसे यूज करें। कुल मिलाकर, वादे आदत बनने दो, न कि बोझ। अगर 9 जनवरी को भी जारी रहें तो साल भर का फायदा। ये तरीके आसान हैं, बस अपनाने की इच्छा हो।

बांग्लादेश हिंसा की छाया IPL पर

BCCI के निर्देश के बाद KKR से बाहर हुए मुस्तफिजुर रहमान

@ रिकू विश्वकर्मा

आईपीएल 2026 की तैयारियों के बीच क्रिकेट और राजनीति एक बार फिर आमने-सामने आ गई है। इस बार मामला शाहरुख खान की टीम कोलकाता नाइट राइडर्स और बांग्लादेशी तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान से जुड़ा है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड यानी BCCI ने KKR को निर्देश दिया है कि वह मुस्तफिजुर रहमान को अपनी टीम से रिलीज करे। यह फैसला ऐसे समय आया है, जब बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रही हिंसा को लेकर देशभर में नाराजगी और विरोध तेज है। BCCI सचिव देवजीत सैकिया ने साफ शब्दों में कहा कि हाल के दिनों में जो घटनाक्रम सामने आए हैं, उन्हें देखते हुए बोर्ड ने यह निर्देश दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर KKR किसी रिफ्लेसमेंट खिलाड़ी को शामिल करना चाहती है, तो बोर्ड इसकी अनुमति देगा। यह फैसला केवल क्रिकेट तक सीमित नहीं है। इसके पीछे मानवीय संवेदनाएं, राजनीतिक प्रतिक्रियाएं और सामाजिक दबाव भी साफ दिखाई देते हैं।

बांग्लादेश में हिंसा और भारत में गुंज

पिछले कुछ हफ्तों से बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर हो रही हिंसा लगातार सुर्खियों में है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पिछले 14 दिनों में तीन हिंदुओं की हत्या हो चुकी है। कई इलाकों में घर जलाए जाने, मंदिरों को नुकसान पहुंचाने और महिलाओं के साथ अत्याचार की घटनाओं के आरोप सामने आए हैं। इन घटनाओं ने भारत में भी गहरा असर डाला। सोशल मीडिया से लेकर राजनीतिक मंचों तक यह सवाल उठने लगा कि ऐसे माहौल में किसी बांग्लादेशी खिलाड़ी का IPL जैसे बड़े टूर्नामेंट में खेलना कितना सही है। यहीं से मुस्तफिजुर रहमान का विरोध शुरू हुआ। विरोध की शुरुआत: बयान, अपील और दबाव मुस्तफिजुर रहमान के खिलाफ सबसे पहले राजनीतिक और धार्मिक नेताओं की तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आईं। शिवसेना नेता संजय निरुपम ने KKR के मालिक शाहरुख खान से सार्वजनिक अपील की। उन्होंने कहा कि जब पूरा देश बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को लेकर गुस्से में है, तब एक बांग्लादेशी खिलाड़ी को टीम में रखना गलत संदेश देता है। उन्होंने शाहरुख खान से आग्रह किया कि वे रहमान को टीम से बाहर करें। शिवसेना (यूबीटी) के प्रवक्ता आनंद दुबे ने इससे भी कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने कहा कि बांग्लादेशी खिलाड़ियों को



भारतीय धरती पर IPL खेलने की अनुमति ही नहीं दी जानी चाहिए। इसके बाद धार्मिक नेताओं के बयान सामने आए।

कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर ने बेहद भावुक और आक्रामक बयान देते हुए कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं का बेरहमी से कत्ल किया जा रहा है। घर जलाए जा रहे हैं, बहनों और बेटियों के साथ अत्याचार हो रहे हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि ऐसे हालात में कोई टीम मालिक उसी देश के खिलाड़ी को अपनी टीम में कैसे शामिल कर सकता है। देवकीनंदन ठाकुर ने शाहरुख खान से माफ़ी मांगने और पीड़ित हिंदू परिवारों के प्रति संवेदना जताने की भी मांग की। उनके अलावा धीरेंद्र शास्त्री और जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने भी मुस्तफिजुर को KKR से हटाने की मांग की। भाजपा नेता संगीत सोम का बयान सबसे विवादित रहा। उन्होंने शाहरुख खान पर सीधे तौर पर देशद्रोह का आरोप लगाया। उनका कहना था कि शाहरुख खान कभी पाकिस्तान तो कभी बांग्लादेश का समर्थन करते हैं, जबकि भारत में उन्हें सुपरस्टार का दर्जा मिला है।

KKR और 9.2 करोड़ का सवाल

मुस्तफिजुर रहमान को KKR ने पिछले महीने अबूधाबी में हुए IPL मिनी ऑक्शन में

अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रही हिंसा, राजनीतिक बयानबाजी और देशव्यापी विरोध के बीच BCCI ने कोलकाता नाइट राइडर्स को दिया बड़ा निर्देश

9.2 करोड़ रुपये में खरीदा था। इस रकम के साथ वे IPL इतिहास में बांग्लादेश के सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए थे। KKR के लिए यह सौदा क्रिकेट के लिहाज से अहम माना जा रहा था। मुस्तफिजुर अपनी स्लोअर गेंदों, कटर और डेथ ओवर्स की किफायती गेंदबाजी के लिए जाने जाते हैं। लेकिन विरोध बढ़ता गया और मामला सिर्फ खेल तक सीमित नहीं रहा। BCCI के निर्देश के बाद अब यह साफ हो गया है कि KKR को न केवल खिलाड़ी छोड़ना होगा, बल्कि आर्थिक और टीम कॉम्बिनेशन के स्तर पर भी नए सिरे से सोचने की ज़रूरत पड़ेगी।

मुस्तफिजुर रहमान के क्रिकेट का सफर

मुस्तफिजुर रहमान का जन्म 6 सितंबर 1995 को बांग्लादेश के सातारखिरा में हुआ था। वे बाएं हाथ के तेज गेंदबाज हैं। उन्होंने 2015 में भारत के खिलाफ वनडे सीरीज से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कदम रखा था।

उसी सीरीज में उन्होंने सबसे ज्यादा विकेट लेकर दुनिया का ध्यान खींचा। इसके बाद उन्होंने बांग्लादेश के लिए तीनों फॉर्मेट में क्रिकेट खेला।

IPL, BPL और अन्य विदेशी टी20 लीगों में भी वे खेल चुके हैं। चोटों से जूझते हुए उन्होंने कई बार वापसी की और सीमित ओवरों की क्रिकेट में बांग्लादेश की गेंदबाजी यूनिट का अहम हिस्सा बने। पिछले IPL सीजन में उन्होंने दिल्ली की ओर से तीन मैच खेले थे और चार विकेट लिए थे। दिल्ली कैपिटल्स ने उन्हें मिचेल स्टार्क की जगह टीम में शामिल किया था, जब स्टार्क वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की तैयारी के चलते आखिरी लीग मैच नहीं खेल पाए थे।

BCCI का रुख और IPL 2026

BCCI का यह फैसला कई मायनों में अहम है। बोर्ड ने यह साफ कर दिया है कि IPL सिर्फ एक खेल आयोजन नहीं है, बल्कि देश की भावनाओं और संवेदनशील मुद्दों से

भी जुड़ा हुआ है। देवजीत सैकिया के बयान से संकेत मिलता है कि बोर्ड किसी भी तरह के विवाद को लीग पर हावी नहीं होने देना चाहता। IPL 2026 की शुरुआत 26 मार्च से होनी है और फाइनल मुकाबला 31 मई को खेला जाएगा। ऐसे में बोर्ड चाहता है कि टूर्नामेंट का माहौल शांत और सकारात्मक बना रहे। इस पूरे विवाद के बीच यह भी अहम है कि सितंबर में भारतीय क्रिकेट टीम बांग्लादेश का दौरा करने वाली है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड के अनुसार, भारतीय टीम 28 अगस्त को वहां पहुंचेगी। इस दौरे में तीन वनडे और तीन टी20 मुकाबले खेले जाएंगे। ऐसे समय में जब क्रिकेटिंग रिश्ते बने हुए हैं, वहीं सामाजिक और राजनीतिक तनाव भी मौजूद है। मुस्तफिजुर रहमान का KKR से बाहर होना केवल एक खिलाड़ी का रिलीज होना नहीं है। यह इस बात का संकेत है कि खेल अब सिर्फ खेल नहीं रह गया है। मुस्तफिजुर रहमान का मामला बताता है कि आज के दौर में क्रिकेट, राजनीति और समाज एक-दूसरे से पूरी तरह अलग नहीं हैं। BCCI का फैसला जहां एक ओर विवाद को शांत करने की कोशिश है, वहीं यह सवाल भी छोड़ जाता है कि आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों और लीग क्रिकेट के रिश्ते किस दिशा में जाएंगे।

भारतीय संस्कृति, बाहरी प्रभाव और सामाजिक असंतुलन

हमारी भारतीय संस्कृति दो अलग-अलग संस्कृतियों के दबाव का सामना कर रही है उनमें से मुस्लिम संस्कृति हिंसा को प्रोत्साहित कर रही है और इसाई संस्कृति का भी हमारी संस्कृति पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है ऐसी परिस्थितियों में हमें मुस्लिम संस्कृति का तो खुलकर विरोध करना चाहिए और इसाई संस्कृति से अपने को चुपचाप बचा लेना चाहिए। इस तरह हमारी रणनीति अलग-अलग होनी चाहिए। इसाई संस्कृति ने ही हमारे समाज में महिला सशक्तिकरण का नारा दिया है अथवा हमारी भारतीय संस्कृति में महिला और पुरुष दोनों का कोई भेद नहीं किया गया है। इस महिला सशक्तिकरण के नारे ने हमारे सामने अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा कर दी हैं। मुझी भर धूर्त महिलाएं राजनेताओं का सहारा लेकर महिला सशक्तिकरण शब्द का दुरुपयोग कर रही हैं और इन महिलाओं के कारण हमारे देश की आम महिलाएं भी परेशान हो रही हैं। सामान्यतः यह देखने में आया है कि अनेक गरीब परिवारों की महिलाएं संपन्न लोगों के परिवारों में मजदूरी करके और साथ में कुछ शारीरिक संबंध बनाकर भी अपना जीवन यापन करती रही हैं इसके साथ-साथ अनेक घरों की संपन्न महिलाएं भी अपने ड्राइवर के साथ या मजदूरों के साथ संपर्क बना लिया करती थीं। इस तरह अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के मार्ग खुले थे लेकिन इन दो प्रतिशत आधुनिक महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण का नारा देकर ऐसी एक संदेह की दीवार खड़ी कर दी है जिसमें महिला और पुरुष एक दूसरे के साथ मिलने जुलने में भी भयभीत होने लगे हैं। कभी भी महिलाएं कोई भी आरोप लगाकर आपको ब्लैकमेल कर सकती हैं और आपके पास कोई समाधान नहीं है क्योंकि महिलाएं पीड़ित हैं यह बात पूरे देश में फैला दी गई है। अब हमारी भारतीय संस्कृति को इस पश्चिमी संस्कृति से अपनी सुरक्षा करनी चाहिए महिलाएं पीड़ित नहीं हैं और महिलाओं को कमजोर या पीड़ित कहना हमारी संस्कृति के विरुद्ध है। इन दो प्रतिशत आधुनिक महिलाओं का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए।

बजरंग मुनि

भारत की ऊर्जा कूटनीति की अग्निपरीक्षा

@ अनुराग पाठक

यूक्रेन युद्ध के बाद जिस ऊर्जा नीति ने भारत को वैश्विक मंच पर व्यावहारिक, आत्मविश्वासी और स्वतंत्र निर्णय लेने वाला देश साबित किया था, वही नीति अब एक नए मोड़ पर खड़ी दिखती है। रूस से कच्चे तेल के आयात में हालिया कटौती को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का यह कहना कि भारत ने यह कदम उन्हें “खुश करने” के लिए उठाया, केवल एक बयान नहीं है। यह उस जटिल अंतरराष्ट्रीय दबाव की झलक है, जिसमें भारत को अपनी आर्थिक जरूरतों, ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता के बीच संतुलन साधना पड़ रहा है।

यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों ने रूस पर कड़े प्रतिबंध लगाए। उसी दौर में भारत ने रूस से सस्ता कच्चा तेल खरीदना शुरू किया और देखते ही देखते वह रूस का सबसे बड़ा तेल खरीदार बन गया। उस समय अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत 120 से 130 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थी, जबकि रूस 20-25 डॉलर प्रति बैरल तक की छूट दे रहा था। भारत जैसे ऊर्जा आयात पर निर्भर देश के लिए यह आर्थिक रूप से एक समझदारी भरा फैसला था। इससे न केवल देश में ईंधन की कीमतों पर नियंत्रण रहा, बल्कि महंगाई पर भी लगाम लगी।

लेकिन यही फैसला अमेरिका और उसके सहयोगी देशों की आंखों में चुभने लगा। अमेरिकी प्रशासन का आरोप रहा कि रूस से तेल खरीदकर भारत अप्रत्यक्ष रूप से यूक्रेन युद्ध को फंड कर रहा है। इसी तर्क के आधार पर भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाया गया, जो पहले से लागू ‘रेसिप्रोकल टैरिफ’ के साथ मिलकर कुल 50 प्रतिशत तक पहुंच गया। इसका सीधा असर भारत के निर्यात, खासकर इंजीनियरिंग, टेक्सटाइल और फार्मा सेक्टर पर पड़ा। अब जब भारत ने चार साल बाद रूस से तेल आयात घटाया है, तो इसके पीछे केवल अमेरिकी दबाव को ही वजह मानना आधी सच्चाई होगी। असलियत यह है कि वैश्विक बाजार की परिस्थितियां भी बदल चुकी हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतें 60-65 डॉलर प्रति बैरल के आसपास आ गई हैं। रूस ने भी अपनी भारी छूट लगभग खत्म कर दी है और अब केवल 1.5 से 2 डॉलर प्रति बैरल की रियायत दे रहा है। इसके साथ ही रूस से तेल लाने में शिपिंग और बीमा की

लागत अधिक है, जो कुल मिलाकर सौदे को पहले जितना फायदेमंद नहीं रहने देती।

ऐसे में भारत का सऊदी अरब, यूएई और अमेरिका जैसे स्थिर और भरोसेमंद सप्लायर्स की ओर लौटना एक व्यावहारिक निर्णय लगता है। यह बदलाव बाजार की मजबूरी और रणनीतिक विवेक का नतीजा है। हालांकि, ट्रम्प का इसे व्यक्तिगत संतुष्टि से जोड़ना इस पूरे घटनाक्रम को राजनीतिक रंग देता है। यहां सवाल उठता है कि क्या भारत की ऊर्जा नीति अब बाहरी दबावों के आगे झुक रही है। भारत अब तक यही कहता आया है कि उसकी विदेश और आर्थिक नीति राष्ट्रीय हितों से संचालित होती है, न कि किसी एक देश को खुश करने से। यदि रूस से तेल आयात में कटौती केवल बदली हुई कीमतों और लॉजिस्टिक कारणों से है, तो इसे स्पष्ट रूप से उसी रूप में पेश किया जाना चाहिए। अन्यथा, यह संदेश जा सकता है कि टैरिफ और दबाव की राजनीति भारत के फैसलों को प्रभावित कर सकती है।

अमेरिकी सीनेटर लिंडसे ग्राहम और भारतीय राजदूत के बीच हुई बातचीत भी इसी दिशा में इशारा करती है कि भारत इस कटौती के बदले टैरिफ में राहत चाहता है। भारत की मांग है कि कुल 50 प्रतिशत टैरिफ घटाकर 15 प्रतिशत किया जाए और रूसी तेल खरीद पर लगाई गई 25 प्रतिशत पेनाल्टी को पूरी तरह हटाया जाए। यह मांग जायज है, क्योंकि वैश्विक व्यापार आपसी दबाव और दंड के बजाय संवाद और संतुलन से चलना चाहिए। भारत के लिए असली चुनौती यही है कि वह अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखे। रूस के साथ संबंध भारत के दशकों पुराने हैं और केवल तेल तक सीमित नहीं हैं। वहीं अमेरिका आज भारत का बड़ा व्यापारिक और रणनीतिक साझेदार है। ऐसे में किसी एक ध्रुव की ओर झुकाव भारत की दीर्घकालिक नीति के खिलाफ होगा।

ऊर्जा सुरक्षा किसी भी देश की राष्ट्रीय सुरक्षा का अहम हिस्सा होती है। भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि उसके फैसले बाजार की वास्तविकताओं, दीर्घकालिक हितों और घरेलू अर्थव्यवस्था की जरूरतों पर आधारित हों, न कि किसी विदेशी नेता की नाराजगी या खुशी पर। आने वाले समय में भारत-अमेरिका ट्रेड डील पर होने वाली बातचीत इस बात की परीक्षा होगी कि क्या भारत दबाव की राजनीति के बिना अपने हितों की रक्षा कर पाता है।

जुबानी तीर

“



की भावनाओं का सम्मान जरूरी है।

देवकीनंदन ठाकुर (प्रसिद्ध कथावाचक)

“



आधार पर।

यह फैसला बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। क्रिकेट को राजनीति में घसीटना गलत है। बांग्लादेश कोई दुश्मन देश नहीं है। खेल को खेल की तरह ही देखा जाना चाहिए, न कि राजनीतिक या भावनात्मक दबाव के

शशि थरूर (कांग्रेस सांसद)

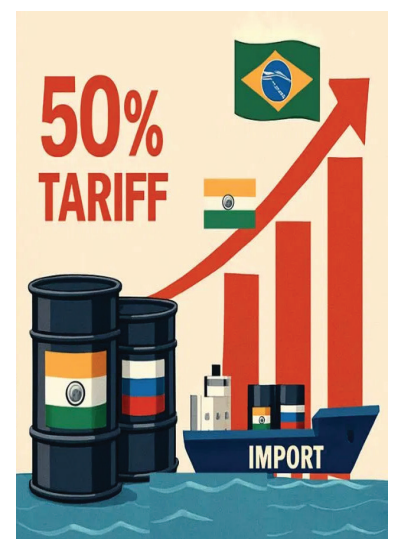
“



को भी आत्मसम्मान के साथ अपना पक्ष स्पष्ट रखना होगा।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य (प्रख्यात संत और विद्वान)

खेल को राजनीति का हथियार बनाना दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन उससे भी अधिक दुःख यह है कि जब भारत के खिलाफ निर्णय लिए जाएं और उन्हें राष्ट्र-सम्मान से जोड़ा जाए। भारत ने हमेशा खेल और संस्कृति को जोड़ने का काम किया है, टकराव का नहीं। यदि कोई देश खेल के माध्यम से वैमनस्य फैलाएगा, तो भारत से भी आत्मसम्मान के साथ अपना पक्ष स्पष्ट रखना होगा।



हाइड्रोसील का आयुर्वेदिक इलाज बिना सर्जरी संतुलन और संयम से उपचार

हाइड्रोसील एक ऐसी समस्या है, जिसे अक्सर लोग मामूली सूजन समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन समय के साथ यह परेशानी बढ़ सकती है और दैनिक जीवन को प्रभावित करने लगती है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में इसका समाधान प्रायः सर्जरी के रूप में सामने आता है, जबकि आयुर्वेद इस रोग को बिना ऑपरेशन, शरीर के आंतरिक संतुलन को ठीक कर उपचार करने की बात करता है। आयुर्वेद न केवल बीमारी के लक्षणों को देखता है, बल्कि उसके मूल कारण तक पहुंचने की कोशिश करता है। हाइड्रोसील भी ऐसा ही रोग है, जिसमें केवल सूजन कम करना पर्याप्त नहीं, बल्कि दोषों के असंतुलन को सुधारना जरूरी माना गया है।

क्या है हाइड्रोसील

हाइड्रोसील पुरुषों में होने वाली एक स्थिति है, जिसमें अंडकोष के आसपास द्रव जमा हो जाता है। इससे अंडकोष की थैली में सूजन आ जाती है। यह सूजन आमतौर पर दर्द रहित होती है, लेकिन आकार बढ़ने पर असहजता, भारीपन और चलने-फिरने में परेशानी हो सकती है। यह समस्या किसी भी उम्र में हो सकती है। बच्चों में यह जन्मजात कारणों से और वयस्कों में चोट, संक्रमण, सूजन या लंबे समय तक खड़े रहने जैसी वजहों से विकसित हो सकती है।

आयुर्वेद में हाइड्रोसील की अवधारणा

आयुर्वेद में हाइड्रोसील को सीधे इसी नाम से नहीं जाना जाता, बल्कि इसे वृद्धि रोग के अंतर्गत वर्णित किया गया है। विशेष रूप से इसे वातज वृद्धि माना गया है। आयुर्वेद के अनुसार जब वात दोष बिगड़ता है, तो शरीर में सूजन, द्रव संचय और असंतुलन पैदा होता है। चरक और सुश्रुत संहिता में वृद्धि रोगों का विस्तार से वर्णन मिलता है। इनमें अंडकोष से संबंधित सूजन को गंभीर माना गया है और इसके लिए औषधि, पंचकर्म और जीवनशैली सुधार को एक साथ अपनाने की सलाह दी गई है।

हाइड्रोसील के आयुर्वेदिक कारण

आयुर्वेद के अनुसार हाइड्रोसील के प्रमुख कारण इस प्रकार हो सकते हैं।

- अत्यधिक श्रम या भारी वजन उठाना
- वात को बढ़ाने वाला भोजन जैसे बहुत ठंडा, सूखा या बासी खाना
- बार-बार कब्ज रहना
- शरीर में अग्नि की कमजोरी
- अंडकोष या निचले पेट में चोट
- संक्रमण या लंबे समय तक सूजन रहना
- जब ये कारण लंबे समय तक बने रहते हैं, तो वात दोष बढ़कर द्रव के असामान्य संचय का कारण बनता है।

आयुर्वेदिक इलाज का सिद्धांत

आयुर्वेदिक उपचार का उद्देश्य तीन स्तरों पर काम करना होता है। पहला, बढ़े हुए वात दोष को शांत करना। दूसरा, जमा हुए द्रव को धीरे-धीरे शरीर से बाहर



निकालना। तीसरा, दोबारा द्रव जमा न हो इसके लिए शरीर की प्रकृति को संतुलित करना। इसी सिद्धांत के आधार पर दवाओं, बाह्य उपचार और आहार-विहार का चयन किया जाता है।

प्रमुख आयुर्वेदिक औषधियां

आयुर्वेद में हाइड्रोसील के लिए कई पारंपरिक औषधियों का उल्लेख मिलता है। ये दवाएं सूजन कम करने, द्रव को अवशोषित करने और वात को संतुलित करने में सहायक मानी जाती हैं।

कांचनार गुग्गुलु-यह आयुर्वेद की एक प्रसिद्ध औषधि है, जिसका उपयोग ग्रंथियों और सूजन संबंधी रोगों में किया जाता है। हाइड्रोसील में यह द्रव संचय को कम करने में मदद करती है। पुनर्नवा-पुनर्नवा को प्राकृतिक मूत्रल माना जाता है। यह शरीर से अतिरिक्त द्रव को बाहर निकालने में सहायक होती है और सूजन कम करती है। गोक्षुर-गोक्षुर मूत्र प्रणाली को मजबूत करता है और वात-पित्त संतुलन में मदद करता है। यह हाइड्रोसील में सहायक औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। एरण्ड मूल-एरण्ड मूल का प्रयोग वात शमन और सूजन घटाने

के लिए किया जाता है। इसका उपयोग काढ़े या औषधि के रूप में किया जाता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन दवाओं का सेवन किसी योग्य आयुर्वेद चिकित्सक की सलाह से ही करना चाहिए।

पंचकर्म की भूमिका

आयुर्वेद में पंचकर्म को रोग की जड़ तक पहुंचने वाली चिकित्सा माना जाता है। हाइड्रोसील के मामलों में विशेष रूप से बस्ती कर्म को उपयोगी बताया गया है। बस्ती के माध्यम से वात दोष को नियंत्रित किया जाता है। औषधीय तेल या काढ़े के द्वारा किया गया बस्ती उपचार सूजन कम करने और द्रव संतुलन सुधारने में मदद करता है। कुछ मामलों में बाह्य लेप और स्वेदन भी उपयोगी माने जाते हैं, जिससे स्थानीय सूजन में आराम मिलता है।

आहार का महत्व

आयुर्वेदिक उपचार में आहार को दवा के समान महत्व दिया गया है। हाइड्रोसील में वात बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों से बचने की सलाह दी जाती है। हल्का और सुपाच्य भोजन। गर्म और ताजा खाना। ची का सीमित प्रयोग। हरी

सब्जियां और मूंग दाल। इनका सेवन लाभकारी माना जाता है। वहीं बहुत ठंडा, बासी, तला-भुना, अत्यधिक नमक और फास्ट फूड से परहेज जरूरी बताया गया है।

जीवनशैली में बदलाव

आयुर्वेद केवल दवा तक सीमित नहीं है। जीवनशैली में बदलाव को उपचार का अनिवार्य हिस्सा माना गया है। लंबे समय तक खड़े रहने से बचें।

भारी वजन न उठाएं। नियमित लेकिन हल्का व्यायाम करें। कब्ज न रहने दें। तनाव कम करें और पर्याप्त नींद लें। ये छोटे बदलाव लंबे समय में बड़ी राहत दे सकते हैं।

क्या सर्जरी से बचा जा सकता है

आयुर्वेद के अनुसार शुरुआती और मध्यम स्तर के हाइड्रोसील में सर्जरी से बचा जा सकता है। नियमित इलाज, संयमित आहार और अनुशासित जीवनशैली से सूजन को नियंत्रित किया जा सकता है। हालांकि बहुत अधिक बढ़े हुए या जटिल मामलों में आधुनिक चिकित्सा की जरूरत पड़ सकती है। आयुर्वेद भी यह मानता है कि हर रोगी का इलाज उसकी स्थिति के अनुसार होना चाहिए। हाइड्रोसील को घरेलू नुस्खों के भरोसे छोड़ देना सही नहीं है। बिना जांच और परामर्श के इलाज करने से समस्या बढ़ सकती है। आयुर्वेदिक इलाज शुरू करने से पहले सही निदान और अनुभवी चिकित्सक की सलाह जरूरी है। हाइड्रोसील एक ऐसी समस्या है, जिसका इलाज केवल सर्जरी तक सीमित नहीं है। आयुर्वेद इसे शरीर के असंतुलन का परिणाम मानता है और उसी आधार पर समग्र उपचार की राह दिखाता है। दवा, पंचकर्म, आहार और जीवनशैली का संतुलित मेल हाइड्रोसील में लंबे समय तक राहत दे सकता है। आयुर्वेद का यही दृष्टिकोण इसे केवल उपचार नहीं, बल्कि जीवन पद्धति बनाता है।

पागल हरनाथ जी: प्रेमरस के अनघट सागर में डूबे संत

पागल हरनाथ जी प्रेमरस से पूरी तरह मदमत्त हो चुके संत थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन भगवान के प्रेम-रस के उस असीम सागर में डूबे रहने को ही अपनी भक्ति और उपासना का सबसे बड़ा सौभाग्य माना। उनके हर रोम-रोम से भगवान के उस परम मधुर नाम का उच्चारण होता रहता था। उनका समस्त जीवन कृष्णमय था, वे हमेशा अपने आराध्य राधा-गोविंद का ही निरंतर चिंतन करते रहते। वे भगवद्रस और दिव्य प्रेम के एकीभूत रूप थे। उन्होंने असंख्य प्राणियों को भगवान के चरणों में प्रेम से परम उन्मत्त कर दिया। निस्संदेह वे भक्ति-सिद्ध जलीयुक्तिक प्राणी थे, सच्चे भागवत पुरुष।

उनकी उपस्थिति ने विक्रम संवत् की बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध को पवित्र कर दिया। फिर भी उनकी ऐतिहासिकता तीन सौ साल पहले से ही सुरक्षित है। महात्मा हरनाथ जी की जन्मभूमि बंगाल प्रांत के बांकुड़ा जनपद का सोनमुखी गांव है। यह स्थान पहले जंगल था, जहां बड़े-बड़े तपस्वियों ने तपस्या की और भगवद्भजन किया। परम प्रसिद्ध वैष्णव संत मनोहर दास जी महाराज संवत् 1649 में सोनमुखी आए थे। उस समय उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि इस पवित्र भूमि पर तीन सौ साल बाद एक ऐसे महात्मा का प्राकट्य होगा, जो महाप्रेमलीलावतार होंगे। वे साक्षात् प्रभु के प्रेमविग्रह-रूप में प्रकट होकर असंख्य प्राणियों को प्रेमरस का दान करेंगे। वे गौरीग चैतन्य महाप्रभु के अभिनव रूप होंगे, और उनकी शेष लीला की अभिव्यक्ति से संसार का मन मुग्ध हो जाएगा। वे गृहस्थ वेश में रहकर भगवान के प्रेम का प्रचार करेंगे। संत मनोहर दास की रसमयी भविष्यवाणी के दिव्य प्रतीक महात्मा हरनाथ जी ही थे।

महात्मा की पहचान महात्माओं और सत्पुरुष ही करते हैं। अभी कुछ ही दिनों की बात है कि नैनीताल के एक जंगल में पदमपुरी सोमवारी बाबा, जो सिद्ध पुरुष थे, तप कर रहे थे। उन्होंने पागल हरनाथ जी के संबंध में कहा था कि बाह्य इंद्रियों से, नेत्रों और बुद्धि आदि की सहायता से हरनाथ महाराज का स्वरूप नहीं समझा जा सकता। बाहर से तो वे एक दाढ़ीवाले प्राणी के रूप में लोगों को भ्रमित कर देते हैं, पर भीतर से उनकी महानता को समझना मेरे भी वश की बात नहीं है। स्वयं हरनाथ जी महाराज कहते थे कि मेरी बातें तो बिना सिर-पैर की होती हैं, उनकी एक पागल की उक्ति समझकर भले ही उपेक्षा कर दीजिए, भले ही मेरे संबंध में विचार न कीजिए, पर मुझे भूलिए नहीं। इसी प्रकार एक बार उन्होंने संकेत किया था कि मैं चराचर में व्याप्त हूं, यह विश्व-ब्रह्मांड मेरा ही स्वरूप है। उनके कथन की गूढ़ता अत्यंत रहस्यमयी है, उनकी कृपा से ही यह समझ में आ सकती है।

जन्म और बाल लीला की दिव्यता

महात्मा हरनाथ जी के जन्म और कर्म दोनों अलौकिक थे। बांकुड़ा जनपद का सोनमुखी ग्राम एक तीर्थ क्षेत्र है। उसी ग्राम में जयराम नामक एक धनी व्यक्ति निवास करते थे। कलकत्ता में उनका छोटा-मोटा काम भी होता था। जयराम वंद्योपाध्याय बड़े आस्तिक प्राणी थे, इसी प्रकार उनकी पत्नी सुदरी देवी भी बड़ी सती-साध्वी थीं। वे शिव, विष्णु और दुर्गा आदि में समान रूप से भक्तिनिष्ठ थीं। संवत् 1922 में पौष शुक्ल तृतीया को सौभाग्यवती सुंदरी देवी ने अपने घर की एक गोशाला में ही हरनाथ जी को जन्म दिया। हरनाथ जी के प्रकट होते ही चारों ओर दिव्यता छा गई। ऐश्वर्य और सौंदर्य के प्रस्फुरण से

प्रेममय जीवन का दिव्य परिचय



कण-कण में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। जयराम दंपति ने दिव्य बालक के जन्मोत्सव में यथाशक्ति दान-पुण्य किए। उनके आरंभिक शुभ संस्कार निपटाए गए।

सबसे बड़ी विलक्षण बात तो यह दिख पड़ी कि शैशवावस्था में जब कभी हरनाथ जी रोते थे, तब लोगों के मुख से हरिनाम का कीर्तन सुनकर चुप हो जाते थे। इस प्रकार वे कभी-कभी अपनी दिव्य लीलाओं का यह कार्य हरनाथ जी के ही संकेत से किया गया है। बचपन में एक बार स्कूल में अध्यापक ने उन्हें कागज पर कुछ लिखने को कहा। हरनाथ जी ने बड़ी सरलता और मधुरता से उत्तर दिया:

“महाशय, कागज तो गंदे हो जाएंगे, पर उन पर अंकित भगवान राधाकृष्ण के सरस नाम दिव्य रत्न की तरह सदा चमकते रहेंगे।”

अध्यापक उनके उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए और उनकी बुद्धि की सराहना की। छह साल की अवस्था से ही सोनमुखी गांव के घर-घर में उन्होंने हरिभक्ति का प्रचार करना आरंभ किया। स्वाभाविक रूप से उनके हृदय और रसना से भगवद्भक्ति की मधुरतम धारा प्रवाहित होने लगी, और लोग उसमें स्नान कर अलौकिक आनंद की अनुभूति करने लगे।

उनकी अलौकिक प्रवृत्ति ने सोनमुखी गांव का वातावरण दिव्य और भक्तिमय बना दिया। संसार के अनित्य सुखों के प्रति उनके मन में तनिक भी आसक्ति न रह गई। आसपास के गांवों में घूम-घूमकर हरिभक्ति की शिक्षा देना ही उनका कार्य हो गया। धीरे-धीरे दीन-दुखियों और असहायों की सेवा में उनकी रुचि बढ़ने लगी। जब वे केवल बारह साल के थे, आसपास के गांवों में कीर्तन का प्रचार करने जाया करते थे। एक बार वे निकटस्थ गांव में कीर्तन का प्रचार कर घर लौट रहे थे। रास्ते में एक झोपड़ी में उन्होंने एक बूढ़े आदमी की, जो बीमार था, स्वेच्छा से सेवा-सुश्रुषा की। बूढ़ा व्यक्ति उनकी कृपा से स्वस्थ हो गया। कुछ दिनों के बाद हरनाथ जी के बीमार पड़ने पर वह उनके घर आया, और उसकी सेवा से वे अच्छे हो गए। इस प्रकार दूसरे के सुख-दुख से सुखी-दुखी होने की भावना उनके मन में सुदृढ़ होने लगी।

गृहस्थाश्रम और भक्ति का संगम

थोड़े समय के बाद सोनमुखी के ही रहने वाले कंदर्प सुंदर भट्टाचार्य की कन्या अखंड सौभाग्यवती कुसुम कुमारी देवी से उनका विवाह कर दिया गया। कुसुम कुमारी देवी के भक्तिमय जीवन ने महात्मा हरनाथ जी को अध्यात्म पथ में बढ़ने में असाधारण सहायता दी। उन्होंने आदर्श गृहस्थ और भगवद्भक्त बनने में बड़ा योग दिया। महात्मा हरनाथ जी के शिष्यों में दोनों के प्रति अगाध श्रद्धा और आदर का भाव पाया जाता है। दोनों पूज्य और उपास्य हैं।

हरनाथ जी को माध्यमिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद विद्याध्ययन के लिए कछियातखोल आना पड़ा। प्रवेशिका परीक्षा में सफल होने पर उन्होंने वर्धमान राजा कॉलेज-विद्यालय, कलकत्ता में नाम लिखाया। वे कक्षा में सदा मौन रहते थे। उन्हें देखने पर ऐसा लगता था कि उन्होंने सहज समाधि लगा ली हो। इस प्रकार अमित शांतिपूर्ण वातावरण में उन्होंने विद्याध्ययन समाप्त किया। ऐसे तो वे साक्षात् विद्यानिधि ही थे। ईश्वर-प्रेम समस्त विद्याओं का मूलाधार है। फिर भी महापुरुष अपने चरित्र में दूसरों के आदर्शस्वरूप लोक-जीवन उपस्थित करते हैं।

महात्मा हरनाथ जी का शरीर यंत्र की भांति चलता रहता था, पर उनका मन लोक-लोकांतरों में परिभ्रमण करता रहता था। एक बार वे अपने कुछ मित्रों के साथ टहल रहे थे। उनका शरीर यंत्रवत् आगे बढ़ रहा था, पर वे शरीर से बाहर ही थे। इस स्थिति में वे एक मस्जिद में पहुंच गए। इब्राहिम नाम का एक व्यक्ति नमाज पढ़ रहा था। हरनाथ जी ने भगवत्प्रेम के आवेश में उसका आलिंगन किया। उनके नेत्रों से प्रेमाश्रु बहने लगी।

वे भगवान के सुमधुर नाम राधा-गोविंद को मंत्रराज मानते थे। सदा इसी मधुर नाम-स्मरण में मग्न रहते थे। एक बार उनकी पत्नी को सांप ने काट लिया। उस समय हरनाथ जी निद्राभिभूत थे। वैद्य-मात्रिकों ने मंत्र उच्चारण किए, पर चेतना न लौट सकी। निद्रा में ही अचानक हरनाथ जी के मुख से ‘राधा-गोविंद’ का नाम निकल पड़ा। लोगों ने राधा-गोविंद कहना आरंभ किया। कुसुम कुमारी देवी

स्वस्थ हो गई, उनकी चेतना लौट आई। इस प्रकार महात्मा हरनाथ जी की अलौकिक प्रवृत्ति से लोग प्रभावित होने लगे, और उनके प्रति पूज्य भाव रखने लगे।

नाम-कीर्तन की तन्मयता और गृहस्थ भार

हरनाथ जी भगवन्नाम-सकीर्तन में इतने तन्मय हो गए कि उनकी कॉलेज की शिक्षा अधूरी ही रह गई। परिवार के पालन-पोषण का प्रश्न बहुत जटिल हो गया। एक दिन शाम को भगवन्नाम का प्रचार कर घर आए। उनके भाई शिवराम ने कहा कि बेकार रहने से काम नहीं चलेगा। जब तक कहीं अच्छी नौकरी नहीं मिल जाती, घर के दरवाजे बंद हैं। हरनाथ जी को उनकी बात लग गई। वे नौकरी के लिए चिंतित हो उठे। भगवान की कृपा से उन्हें मुजफ्फरपुर के निकट अयोध्या में अध्यापन का कार्य मिल गया। कुछ दिनों के बाद वे कश्मीर में किसी अच्छे पद पर नियुक्त हो गए।

कश्मीर में तथा हिमालय के अन्य प्रदेशों में उन्होंने तपस्वियों और महात्माओं से घूम-घूमकर कहा कि महाराज, केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। भक्ति भगवान के मधुर नाम-कीर्तन से प्राप्त होती है। भगवद्भजन ही जीवन का सार है। इस प्रकार वे गृहस्थ वेश में रहकर भी साधु-संतों को भगवान के नामामृत का रसास्वादन कराते रहे। महाराजा कश्मीर उनका बड़ा सम्मान करने वाले थे। वे उनके अनुयायी हो गए। हरनाथ जी ने कश्मीर राज्य के धर्मार्थ विभाग में कुछ समय तक काम किया। उसके बाद वे सोनमुखी लौट आए। कश्मीर-निवास-काल में वे देश के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्रों वृंदावन, प्रयाग, हरिद्वार, जगन्नाथ पुरी और काशी आदि में विख्यात हो गए। उनकी प्रसिद्धि बढ़ गई।

शिष्यों की निष्ठा और अलौकिक दर्शन

अटल बिहारी नंदी महात्मा हरनाथ जी के प्रधान शिष्यों में परिगणित होते हैं। वे हाथरस में रेलवे स्टेशन मास्टर थे। एक दिन दोपहर को एक अपरिचित व्यक्ति ने उनसे हाथरस से वृंदावन का टिकट मांगा। नंदी महोदय ने कहा कि वृंदावन के लिए आज दूसरी गाड़ी कोई नहीं आने वाली। अपरिचित ने कहा कि गाड़ी आ रही है। थोड़े समय के बाद ही एक स्पेशल गाड़ी आ पहुंची। नंदी महोदय के देखते-ही-देखते अपरिचित उसमें बैठ गए। नंदी आश्चर्यचकित हो गए। अपरिचित के वेश में पागल हरनाथ जी ही थे। उन्होंने कहा, “नंदी, मैं तुमसे फिर मिलूंगा।” नंदी महोदय ने हरनाथ ठाकुर को प्रणाम किया।

अटल बिहारी नंदी का घर बंगाल के हुगली जनपद में था। एक बार हरनाथ ठाकुर उनके अतिथि थे। नंदी की पत्नी शर्मिला उनमें बड़ी निष्ठा रखती थी। शर्मिला ने सोचा कि ठाकुर ब्राह्मण हैं, हम लोग उनसे नीच वर्ण में हैं। इसलिए भोजन की व्यवस्था पड़ोस की ही एक विधवा ब्राह्मणी के घर में कर दी गई। विधवा की एक कन्या थी, जो विवाहित थी। कन्या का पति चरित्रभ्रष्ट था, वह रेलवे में नौकर था। जब ठाकुर ब्राह्मणी के घर भोजन करने गए, तब उस कन्या का मन ठाकुर के दिव्य शरीर-सौंदर्य पर मुग्ध हो गया। उसका भाव हरनाथ जी से अपवित्र संबंध स्थापित करने की ओर हो गया। उसने ठाकुर को भोजन कराया और बार-बार उनकी ओर देखती रही। ठाकुर से शर्मिला ने भोजन के संदर्भ में पूछा। हरनाथ जी ने कहा कि भोजन अमृत पवित्र तो है, पर उसमें प्रेम का अभाव था। उन्होंने आग्रह किया कि मां, मैं आपके हाथ का भोजन करूंगा, ब्राह्मणी के घर नहीं जाऊंगा।

अखबार बेचने से अरबों का सफर

95 की उम्र में रिटायर हो रहे निवेश के जादूगर वॉरेन बफेट

छह साल की उम्र में चिंगम बेचने वाला बच्चा कैसे बना दुनिया की सबसे बड़ी इन्वेस्टमेंट कंपनी का मालिक, और क्यों आज भी 34 लाख करोड़ रुपये कैश संभालकर बैठे हैं वॉरेन बफेट

@ आनंद मीणा

अमेरिका के ओमाहा शहर में 95 साल का एक बुजुर्ग आज रिटायरमेंट की घोषणा कर रहा है। यह कोई आम रिटायरमेंट नहीं है। यह उस व्यक्ति का रिटायरमेंट है जिसने पिछले 60 सालों में निवेश की दुनिया की परिभाषा बदल दी। नाम है वॉरेन एडवर्ड बफेट, जिन्हें पूरी दुनिया निवेश का जादूगर और ओमाहा का ओरेकल कहती है। आज उनकी कंपनी बर्कशायर हैथवे का साम्राज्य करीब 97 लाख करोड़ रुपये का है। कंपनी के पास अकेले कैश और कैश जैसे एसेट्स में करीब 34 लाख करोड़ रुपये रखे हैं। यही नहीं, 95 साल की उम्र में भी बफेट दुनिया के टॉप 10 अमीरों में शामिल हैं। लेकिन यह कहानी किसी अचानक मिली दौलत की नहीं है। यह कहानी है अखबार बेचने वाले एक बच्चे की, जिसने धैर्य, सादगी और लंबे नजरिए से दुनिया का सबसे भरोसेमंद निवेशक बनने तक का सफर तय किया।

महामंदी के साये में जन्म

साल 1929। अमेरिका इतिहास की सबसे बड़ी महामंदी से गुजर रहा था। स्टॉक मार्केट ध्वस्त हो चुका था। लाखों लोग बेरोजगार थे। इसी दौर में ओमाहा शहर में स्टॉक ब्रोकर हॉवर्ड बफेट को भी भारी नुकसान उठाना पड़ा। परिवार की आर्थिक हालत डगमगा गई। इसी मुश्किल वक्त के बीच 30 अगस्त 1930 को वॉरेन बफेट का जन्म हुआ। घर में पैसों की तंगी थी, लेकिन माहौल में बिजनेस और निवेश की बातें थीं। पिता की वजह से वॉरेन ने बहुत छोटी उम्र में ही शेयर बाजार, जोखिम और पैसों की अहमियत को समझना शुरू कर दिया। बचपन में ही उन्हें किताबें पढ़ने का शौक लग गया। लाइब्रेरी में उन्हें अमेरिकी लेखक फ्रांसेस मिनकर की किताब 'वन थाउजैंड वेज टू मेक 1000 डॉलर्स' मिली। इस किताब ने उनके दिमाग में एक बात बैठा दी। पैसा मेहनत और समझदारी से बनाया जा सकता है।

छह साल का कारोबारी

वॉरेन बफेट सिर्फ छह साल के थे, जब उन्होंने पहला बिजनेस शुरू किया। दादा की किराने की दुकान से चिंगम खरीदी और पड़ोसियों को बेचकर मुनाफा कमाया। इसके बाद कोका-कोला की बोतलें बेचना शुरू किया। छह बोतलों के एक पैक पर उन्हें पांच सेंट का फायदा होता था। धीरे-धीरे उनका दायरा बढ़ता गया। अखबार बेचे, गोल्फ बॉल ढूँढ़कर बेचीं, पॉपकॉर्न और मूंगफली बेची। उनके लिए यह खेल नहीं था, बल्कि सीखने की प्रक्रिया थी। कम खर्च में कैसे ज्यादा कमाया जाए। 11 साल की उम्र में वे न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज देखने गए। वहीं से शेयर बाजार का जुनून उनके अंदर और गहरा हो गया।



पहला शेयर और पहला सबक

साल 1942 में उनके पिता हॉवर्ड बफेट अमेरिकी कांग्रेस के सदस्य चुने गए। परिवार वॉशिंगटन शिफ्ट हो गया। वॉरेन द वॉशिंगटन पोस्ट अखबार बेचते थे। इससे उन्हें हर महीने करीब 175 डॉलर मिल जाते थे, जो उस दौर में अच्छी कमाई मानी जाती थी। इसी साल वॉरेन ने अपनी बड़ी बहन डोरिस के साथ मिलकर 120 डॉलर के तीन शेयर खरीदे। ये शेयर सिटीज सर्विस नाम की पेट्रोलियम कंपनी के थे। कुछ महीनों बाद शेयर गिरने लगे। बहन ने बेचने का दबाव बनाया, लेकिन वॉरेन ने इंतजार किया। चार महीने बाद शेयरों से पांच डॉलर का मुनाफा हुआ। रकम छोटी थी, लेकिन सबक बड़ा- धैर्य का फल मिलता है।

13 साल में टैक्स, 14 में जमीन

जब ज्यादातर बच्चे खेल रहे होते हैं, तब 13 साल के वॉरेन ने पहला इनकम टैक्स रिटर्न फाइल किया। उन्होंने अखबार बेचने से हुई कमाई को आधिकारिक तौर पर घोषित किया। 14 साल की उम्र में उन्होंने करीब 40 एकड़ खेती की जमीन खरीदी और उसे किराए पर दे दिया। हाई स्कूल के दौरान 17 साल की उम्र में उन्होंने अपनी सेविंग्स से पिनबॉल मशीनें खरीदीं और नाई की दुकानों में लगवा दीं। वहां से नियमित कमाई होने लगी। यह साफ

हो चुका था कि वॉरेन बफेट पैसों को सिर्फ खर्च करने की चीज नहीं, बल्कि काम करने वाला औजार मानते थे।

प्यार की कहानी भी उतनी ही सादी

कॉलेज के दिनों में वॉरेन ने निवेश पर गहराई से पढ़ाई की। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में उनकी मुलाकात बेंजामिन ग्राहम से हुई, जिन्हें "वैल्यू इन्वेस्टिंग" का जनक माना जाता है। यहीं से बफेट की निवेश फिलॉसफी बनी- अच्छी कंपनी खरीदो, सही कीमत पर खरीदो और लंबे समय तक रखो। यही सोच आगे चलकर बर्कशायर हैथवे की नींव बनी। साल 1950 की गर्मियों में वॉरेन अपनी छोटी बहन बर्टी से मिलने कोलंबिया गए। वहीं बर्टी ने अपनी रूममेट सुसैन थॉम्पसन से उनकी मुलाकात कराई। वॉरेन को पहली नजर में प्यार हो गया, लेकिन सुसैन को कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। वॉरेन ने हार नहीं मानी। वे सुसैन के पिता, प्रोफेसर विलियम थॉम्पसन के करीबी बन गए। धीरे-धीरे दोस्ती बढ़ी और सुसैन को भी वॉरेन का साथ पसंद आने लगा। दो साल बाद सुसैन ने शादी के लिए हां कह दी। 19 अप्रैल 1952 को दोनों शादी के बंधन में बंध गए।

बर्कशायर हैथवे और 60 साल का सफर

1965 में वॉरेन बफेट ने बर्कशायर हैथवे की कमान

संभाली। तब कंपनी के एक शेयर की कीमत सिर्फ 18 डॉलर थी। आज वही शेयर 8 लाख डॉलर से ज्यादा का है। यानी करीब 45 हजार गुना बढ़ोतरी। इन 60 सालों में अमेरिका ने 11 राष्ट्रपति देखे। कई आर्थिक संकट आए। बड़ी-बड़ी कंपनियां डूबीं और उभरीं। लेकिन बफेट का तरीका नहीं बदला। वे आज भी सादा खाना खाते हैं, पुराने घर में रहते हैं और कोका-कोला पीते हैं।

95 की उम्र में रिटायरमेंट

सबसे बड़ा सवाल यही है- जब इतने मौके हैं, तो बफेट इतना कैश क्यों रखते हैं? बफेट मानते हैं कि कैश सुरक्षा और मौके दोनों देता है। जब बाजार गिरता है, तब वही कैश सबसे बड़ा हथियार बनता है। वे जल्दबाजी में निवेश नहीं करते। सही कीमत और सही मौका मिलने तक इंतजार करते हैं।

आज, 95 साल की उम्र में, वॉरेन बफेट रिटायर हो रहे हैं। यह एक युग का अंत है, लेकिन उनकी सोच, उनके नियम और उनकी सादगी निवेश की दुनिया में हमेशा ज़िंदा रहेगी। अखबार बेचने वाला वह बच्चा यह साबित कर गया कि दौलत किस्मत से नहीं, धैर्य, अनुशासन और ईमानदारी से बनती है। और शायद यही वजह है कि वॉरेन बफेट सिर्फ अमीर नहीं, बल्कि भरोसे का दूसरा नाम बन गए हैं।

मां दुर्गा ने किया देवताओं का मान मर्दन

@ भारतश्री ब्यूरो

एक बार देवी मां दुर्गा ने देवताओं से कहा कि तुम क्या करते हो और तुम्हारी क्या शक्ति है? तब सभी देवता अपनी शक्तियों का बखान करने लगे। तब मां भगवती दुर्गा ने कहा कि चलो मैं तुम सबकी परीक्षा लेती हूँ। मां ने एक तिनका पृथ्वी पर फेंक दिया और देवताओं से कहा कि तुम इसे हिला कर दिखाओ। पवन देव ने प्रबल वायु के झोंकों को आदेश दिया लेकिन तिनका अपने स्थान नहीं हिला। उसके बाद वरुण देव ने पानी के सैलाव को आदेश दिया लेकिन तिनका फिर भी अपने स्थान पर बना रहा। अग्नि देव ने उस तिनके को जलाने का आदेश दिया लेकिन आग कुछ भी न कर सकी। इस प्रकार सभी देवताओं ने अपनी तरफ से प्रयास किया लेकिन तिनका अपने स्थान से टस से मस नहीं हुआ। जब सबका मान मर्दन हो गया तब सभी त्राहि माम-त्राहि माम करते हुए मां की शरणागत हो गए। मां दुर्गा ने उन सभी को क्षमा करके आशीर्वाद प्रदान किया और वे सभी अपने-अपने लोक को प्रस्थान कर गए।

अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है

रावण जैसे महा प्रतापी ज्ञानी और विद्वान को अहंकार ही ग्रस गया। मनुष्य में कर्ताभाव कभी नहीं आना चाहिए। गुरुद्वारे में जब अरदास होती है तो वर्णन आता है तो वर्णन आता है-प्रथम भगवती सिमर के...। मां का कथन है कि मैं एक ओंकार हूँ, सतनाम हूँ, कर्ता पुरुष हूँ, जो जगत में दिखाई दे रहा है उसे मैंने पैदा किया है। तुम यह मान लेते हो कि मैंने किया है, मैं राष्ट्रपति हूँ, मैं प्रधानमंत्री हूँ, मैंने फलों-फलों का काम किया है। मैंने ग्रंथ पढ़ लिए हैं लेकिन ग्रंथ से भी बड़ा महा ग्रंथ है। मां एक पल में ही सैकड़ों पृथ्वियों का निर्माण कर देती है और नष्ट भी कर देती है।

रक्षा के लिए मां से करें प्रार्थना

मां भगवती से अपनी रक्षा करने के लिए इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए। शत्रुओं का भय नष्ट करने वाली जगदम्बिके ! मेरी

रक्षा करो। पूर्व दिशा में ऐन्द्री मेरी रक्षा करें। अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नैऋत्यकोण में खड्गधारिणी मेरी रक्षा करें। पश्चिम दिशा में वारुणी और वायव्य कोण में मृग पर सवारी करने वाली मृगवाहिनी देवी मेरी रक्षा करें। उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान कोण में शूलधारिणी - देवी रक्षा करें। ब्रह्माण्ड ! आप ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करें। इसी प्रकार शत्रु को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करें जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें।

वामभाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता र करें। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करें। उमा मेरे मस्तक विराजमान होकर रक्षा करें। ललाट में मालाधारी रक्षा करें उर यशस्विनी देवी मेरी भौहों का संरक्षण करें। भौहों के मध्य भा में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करें। दोनों नेत्रों के मध्यभाग में शिखिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करें। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शाकंभरी कानों के मूल भाग की रक्षा करें। नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओठ में चर्चिका देवी रक्षा करें, नीचे के ओठ में अमृत कला तथा जिह्वा में सरस्वती देवी रक्षा करें। कौमारी दांतों की और चण्डिका कण्ठ प्रदेश की रक्षा करें। चित्रघण्टा गले की घंटी की और महामाया तालु में रहकर रक्षा करें। सर्वमंगला मेरी वाणी की रक्षा करें। धनुर्धरी मेरुदंड में रहकर रक्षा करें। कामाक्षी टोढ़ी की और भद्रकाली ग्रीवा में और

कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करें। दोनों कंधों में खड्गिनी और मेरी दोनों भुजाओं को वज्रधारिणी रक्षा करें। दोनों हाथों में दण्डिनी और अंगुलियों में अम्बिका रक्षा करें शूलेश्वरी नखों को रक्षा करें कुलेश्वरी कुक्षि अर्थात् पेट में रहकर रक्षा करें। महादेवी दोनों स्तनों को और शोक विनाशिनी देवी मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में और शूल धारिणी उदर में रहकर रक्षा करें। नाभि में कामिनी और गुह्य भाग की गुह्येश्वरी रक्षा करें पूतना और कामिका लिंग की और महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करें। भगवती कटिभाग में और विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबलादेवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें।



2026 का चुनावी साल

भारत से लेकर दुनिया तक, सत्ता की सबसे बड़ी परीक्षा

भारत के 5 राज्यों में चुनाव, 17% आबादी तय करेगी भविष्य की सरकार, वहीं दुनिया के 36 से ज्यादा देशों में भी बदलेगी सत्ता की तस्वीर

@ सोम्या चौबे

साल 2026 सिर्फ एक कैलेंडर ईयर नहीं है, बल्कि राजनीति की दुनिया में बड़े फैसलों का साल है। भारत से लेकर पड़ोसी देशों और पश्चिम एशिया तक, लोकतंत्र की सबसे बड़ी परीक्षा होने जा रही है। इस साल भारत के 5 राज्यों में विधानसभा चुनाव होंगे, जहां देश की करीब 17 प्रतिशत आबादी अपने लिए नई सरकार चुनेगी। वहीं, दुनिया के 36 से ज्यादा देशों में आम चुनाव होंगे, जिनके नतीजे वैश्विक राजनीति की दिशा तय करेंगे। भारत में ये चुनाव इसलिए भी अहम हैं क्योंकि कुछ राज्यों में भाजपा अब तक सत्ता से दूर रही है, तो कुछ जगह वह लगातार तीसरी बार जीत दर्ज करने की कोशिश में है। दूसरी ओर, दुनिया में बांग्लादेश, नेपाल और इजराइल जैसे देशों में सत्ता परिवर्तन की संभावनाएं बनी हुई हैं।

पश्चिम बंगाल: ममता बनर्जी बनाम भाजपा, इतिहास के मोड़ पर चुनाव

पश्चिम बंगाल में पिछले 14 साल से सत्ता की कमान ममता बनर्जी के हाथ में है। 2026 का चुनाव उनके राजनीतिक करियर का सबसे बड़ा इम्तिहान माना जा रहा है। अगर तृणमूल कांग्रेस यह चुनाव जीत जाती है, तो ममता बनर्जी लगातार चौथी बार मुख्यमंत्री बनेंगी। ऐसा करने वाली वे देश की पहली महिला मुख्यमंत्री होंगी।

अब तक देश में यह रिकॉर्ड तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता के नाम है, जो पांच बार मुख्यमंत्री रहीं, लेकिन उनका कार्यकाल लगातार नहीं था। ऐसे में ममता के सामने इतिहास रचने का मौका है। हालांकि रास्ता आसान नहीं है। भाजपा लगातार तीसरी बार उन्हें चुनौती दे रही है। 2021 के चुनाव में भाजपा ने मजबूत प्रदर्शन किया था और अब पार्टी पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है। कानून-व्यवस्था, भ्रष्टाचार और केंद्र-राज्य टकराव इस चुनाव के बड़े मुद्दे होंगे।

असम: भाजपा की हैट्रिक या विपक्ष का गठबंधन?

असम में पिछले 10 साल से भाजपा सत्ता में है और अब पार्टी तीसरी बार सरकार बनाने की कोशिश में जुटी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बीते 6 महीनों में 3 बार असम का दौरा कर चुके हैं, जिससे साफ है कि पार्टी इस चुनाव को कितनी गंभीरता से ले रही है। भाजपा ने 126 विधानसभा सीटों में से 100 से ज्यादा सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। असम में बांग्लादेश सीमा, घुसपैठ, अवैध प्रवास, असमिया पहचान और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दे प्रमुख हैं। भाजपा को रोकने के लिए कांग्रेस ने बड़ा दांव खेला है। कांग्रेस ने 8 से ज्यादा पार्टियों के साथ गठबंधन बनाया है, जिसमें वामपंथी और क्षेत्रीय दल शामिल हैं। यह चुनाव असम में भाजपा बनाम संयुक्त विपक्ष की सीधी लड़ाई माना जा रहा है।



तमिलनाडु: 60 साल पुरानी परंपरा और नया सियासी मोड़

तमिलनाडु भारतीय राजनीति का एक अनोखा राज्य है। यहां पिछले 60 सालों से न कांग्रेस की सरकार बनी है और न ही भाजपा की। राज्य की राजनीति पर डीएमके और एआईएडीएमके का दबदबा रहा है। इस बार भाजपा जयललिता की पार्टी एआईएडीएमके के साथ गठबंधन कर सकती है। अगर ऐसा होता है, तो यह चुनाव राज्य की राजनीति में बड़ा बदलाव ला सकता है। इसी बीच सुपरस्टार विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कडगम (TVK) भी चुनावी मैदान में है। विजय की लोकप्रियता युवा वोटर्स के बीच काफी है और माना जा रहा है कि वे पारंपरिक वोट बैंक को तोड़ सकते हैं। तमिलनाडु का चुनाव इस बार त्रिकोणीय मुकाबले में बदलता दिख रहा है।

केरल: लेफ्ट का गढ़ और बदलती राजनीति

केरल देश का इकलौता राज्य है, जहां अभी भी वामपंथी सरकार सत्ता में है। यहां आमतौर पर हर पांच साल में सरकार बदलने की परंपरा रही है, लेकिन 2021 में लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (LDF) ने इस परंपरा को तोड़ते हुए लगातार दूसरी बार सरकार बनाई। अब कांग्रेस की अगुआई वाला यूडीएफ एंटी-इनकम्बेंसी को भुनाने की कोशिश करेगा।

दूसरी ओर, भाजपा केरल में अपनी जगह बनाने के लिए लगातार कोशिश कर रही है। अब तक भाजपा केरल में एक भी विधानसभा सीट नहीं जीत पाई है, लेकिन पिछले

लोकसभा चुनाव में पार्टी ने त्रिशूर सीट जीतकर इतिहास रच दिया था। इसके अलावा दिसंबर 2025 में भाजपा ने पहली बार तिरुवनंतपुरम नगर निगम चुनाव जीतकर सियासी संकेत दे दिए हैं।

पुडुचेरी: छोटी विधानसभा, बड़ा सियासी महत्व

पुडुचेरी देश की सबसे कम सीटों वाली विधानसभा है, लेकिन यहां की राजनीति राष्ट्रीय स्तर पर काफी मायने रखती है। 2021 में कांग्रेस सरकार गिरने के बाद AIN-RC-BJP गठबंधन ने सत्ता संभाली और एन. रंगासामी मुख्यमंत्री बने। यह पहली बार था जब भाजपा पुडुचेरी की सत्ता में सीधे तौर पर शामिल हुई। अब कांग्रेस डीएमके के साथ गठबंधन कर वापसी की कोशिश कर रही है और सरकार गिरने के मुद्दे को एंटी-इनकम्बेंसी में बदलना चाहती है। साल 2026 सिर्फ भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए चुनावी साल है। एशिया, यूरोप और मिडिल ईस्ट में सत्ता परिवर्तन की संभावनाएं बनी हुई हैं।

बांग्लादेश: 35 साल बाद नया प्रधानमंत्री?

बांग्लादेश में यह चुनाव ऐतिहासिक माना जा रहा है। शेख हसीना के तख्तापलट के बाद पहली बार देश में आम चुनाव हो रहे हैं। शेख हसीना भारत आ चुकी हैं और उनकी पार्टी अवामी लीग पर चुनाव लड़ने का बैन है। विपक्षी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी की नेता खालिदा जिया का निधन हो चुका है। अब पार्टी की कमान उनके बेटे तारिक रहमान के हाथ में है। माना जा रहा है कि BNP की जीत की संभावना सबसे ज्यादा है। अगर तारिक रहमान

प्रधानमंत्री बनते हैं, तो बांग्लादेश को 35 साल बाद नया प्रधानमंत्री मिलेगा। 1990 के बाद से अब तक सिर्फ शेख हसीना और खालिदा जिया ही देश की सत्ता में रही हैं।

नेपाल: जेन-जी आंदोलन के बाद पहला चुनाव

नेपाल में 5 मार्च को मतदान होगा। यह चुनाव जेन-जी आंदोलन और सत्ता परिवर्तन के बाद पहला आम चुनाव है। आंदोलन के बाद देश की 10 कम्युनिस्ट पार्टियों ने मिलकर नई नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी बनाई है। इस नई पार्टी को चुनाव का सबसे बड़ा दावेदार माना जा रहा है। नेपाल में यह चुनाव तय करेगा कि देश स्थिरता की ओर बढ़ेगा या फिर एक बार फिर राजनीतिक अस्थिरता का दौर शुरू होगा।

इजराइल: गाजा युद्ध के बाद फैसला

इजराइल में यह चुनाव गाजा में फिलिस्तीन-इजराइल युद्ध के बाद हो रहा है। पिछले कई चुनावों से वहां कोई भी पार्टी अकेले बहुमत हासिल नहीं कर पा रही है। बेजामिन नेतन्याहू पहले ही इजराइल के सबसे लंबे समय तक सत्ता में रहने वाले प्रधानमंत्री बन चुके हैं। इस बार भी गठबंधन सरकार बनना लगभग तय माना जा रहा है। यह चुनाव नेतन्याहू के राजनीतिक भविष्य के लिए निर्णायक साबित हो सकता है। साल 2026 लोकतंत्र के लिए बेहद अहम है। भारत में जहां 5 राज्यों की राजनीति नई दिशा लेगी, वहीं दुनिया के कई देशों में सत्ता के समीकरण बदलेंगे। यह साल तय करेगा कि कौन सी विचारधाराएं मजबूत होंगी और कौन सी कमजोर।

लिवर की चोट: निमेषुलाइड पर 100 mg से ज्यादा डोज का बैन तेज राहत के पीछे छिपा खतरा

केंद्र सरकार ने हाल ही में एक बड़ा फैसला लिया है। 31 दिसंबर 2025 को स्वास्थ्य मंत्रालय ने घोषणा की कि 100 mg से ज्यादा वाली निमेषुलाइड की सभी ओरल दवाओं—जैसे टैबलेट, सिरप या कैप्सूल—के बनाने, बेचने और बांटने पर तुरंत बैन लगा दिया गया है। यह कदम लोगों की सेहत को बचाने के लिए उठाया गया, क्योंकि इस दवा की ज्यादा डोज से लिवर को गंभीर नुकसान हो सकता है। निमेषुलाइड एक पॉपुलर पेनकिलर है, जो बुखार, सिरदर्द, जोड़ों के दर्द या मासिक धर्म के दर्द में तेजी से राहत देती है। लेकिन अब सिर्फ 100 mg या उससे कम डोज वाली दवाएं ही बाजार में मिलेंगी। गैर-ओरल रूप, जैसे इंजेक्शन या जेल, अभी भी इस्तेमाल हो सकते हैं। यह बैन 29 दिसंबर 2025 से लागू हो गया, और दवा कंपनियों को तुरंत इसका पालन करना होगा। डॉक्टरों को सलाह दी गई है कि वे मरीजों को सुरक्षित विकल्प दें। कई देशों, जैसे अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया में यह दवा पहले से ही पूरी तरह बैन है, क्योंकि वहां इसके साइड इफेक्ट्स के कई केस सामने आए। भारत में 2011 से यह 12 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए बैन थी, लेकिन अब वयस्कों के लिए भी सख्ती बढ़ गई। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं कि यह फैसला देर से आया, लेकिन जरूरी है। बाजार में यह दवा आसानी से मिल जाती थी, और लोग बिना डॉक्टर की सलाह के लेते थे। अब दवा दुकानों पर पुरानी स्टॉक भी बिक्री के लिए नहीं हो सकती। यह बदलाव लोगों को सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम दर्द की तेज राहत के चक्कर में अपनी सेहत से खिलवाड़ कर रहे थे? सरकार का यह कदम न सिर्फ दवा नियंत्रण को मजबूत करता है, बल्कि आम आदमी को जागरूक भी बनाता है। कुल मिलाकर, यह बैन सेहत की प्राथमिकता को दिखाता है, लेकिन सवाल यह है कि क्या लोग अब सुरक्षित दवाओं की ओर मुड़ेंगे?

हर घर की पसंदीदा दवा: निमेषुलाइड की लोकप्रियता और इतिहास की सच्चाई

निमेषुलाइड 1990 के दशक में भारत में आई, और जल्द ही यह बुखार-दर्द की पहली पसंद बन गई। इसका तेज असर—बस 15-30 मिनट में राहत—लोगों को आकर्षित करता था। जोड़ों का दर्द, सिरदर्द या बुखार हो, तो डॉक्टर अक्सर इसे लिखते थे। बाजार में ब्रांड जैसे नाइज, निमुलिड या को-निमेषुलाइड आसानी से मिलते, और कीमत भी सस्ती थी। भारत में सालाना करोड़ों टैबलेट बिकतीं, खासकर ग्रामीण इलाकों में जहां डॉक्टर कम होते हैं। लेकिन इसकी लोकप्रियता के पीछे एक कड़वी सच्चाई छिपी है। 2000 के दशक में यूरोप और अमेरिका में इसके लिवर डैमेज के केस बढ़े, तो कई देशों ने इसे बैन कर दिया। भारत में 2011 में ICMR की रिपोर्ट के बाद बच्चों के लिए बैन लगा, लेकिन वयस्कों के लिए जारी रही। फिर भी, दुरुपयोग जारी रहा—लोग खुद से ज्यादा डोज लेते, या लंबे समय तक इस्तेमाल करते। अध्ययनों से पता चला कि भारत में इसके 70% इस्तेमाल बिना सलाह के होते थे। यह दवा NSAID ग्रुप की है, जो सूजन कम करती है, लेकिन अन्य दवाओं से अलग क्योंकि यह COX-2

सरकार का सख्त कदम: 100 mg से ऊपर निमेषुलाइड बनाने-बेचने पर तुरंत रोक



एंजाइम को ज्यादा टारगेट करती है। डॉक्टर कहते हैं कि इसका फायदा तेज राहत है, लेकिन रिस्क भी उतना ही बढ़ा। अब बैन से सवाल उठता है कि क्या हमारी सेहत प्रणाली दवाओं की मार्केटिंग पर ज्यादा निर्भर हो गई थी? यह इतिहास हमें सिखाता है कि कोई दवा जितनी पॉपुलर हो, उतनी ही सावधानी बरतनी चाहिए। क्या समय आ गया है कि हम दर्द सहन करने के बजाय कारण ढूंढ़ें? निमेषुलाइड की कहानी यही बताती है—तेज राहत के लिए लंबे नुकसान न झेलें।

छिपा खतरा: ज्यादा डोज से लिवर पर हमला, जानिए कैसे होता है नुकसान

निमेषुलाइड की ज्यादा डोज लिवर के लिए जहर की तरह काम करती है। यह दवा लिवर में मेटाबॉलाइज होती है, और 100 mg से ऊपर लेने पर टॉक्सिन्स बनते हैं जो लिवर सेल्स को नष्ट कर देते हैं। लक्षण शुरू में हल्के होते—थकान, पेट दर्द या पीली त्वचा—लेकिन बाद में लिवर फेलियर हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, इसके 1-2% यूजर्स को हेपेटोटाॅक्सिसिटी हो सकती है, और भारत जैसे देशों में जहां दुरुपयोग ज्यादा है, यह आंकड़ा बढ़ जाता है। खासकर महिलाओं, बुजुर्गों या पहले से लिवर समस्या वालों के लिए खतरा ज्यादा। 2011 की रिपोर्ट में 50 से ज्यादा केस सामने आए जहां

निमेषुलाइड से मौत हुई। अन्य साइड इफेक्ट्स में पेट में अल्सर, स्किन रैश या किडनी समस्या भी शामिल। बैन का मुख्य कारण यही है—सुरक्षित विकल्प उपलब्ध होने पर रिस्क क्यों लें? सोशल मीडिया पर लोग शेयर कर रहे हैं कि यह फैसला सही है, क्योंकि कई परिवारों ने लिवर ट्रांसप्लांट तक का सामना किया। लेकिन सवाल यह है कि क्या हमारी जागरूकता इतनी कम है कि बिना सोचे दवा लेते रहें? यह खतरा हमें सोचने पर मजबूर करता है—क्या दर्द की दवा लेना जरूरी है, या जीवनशैली बदलना बेहतर? डॉक्टर सलाह देते हैं कि डोज कभी 100 mg से ऊपर न लें, और लिवर फंक्शन टेस्ट करवाते रहें। कुल मिलाकर, यह बैन एक चेतावनी है कि छोटी सी राहत बड़े नुकसान का कारण न बने।

सुरक्षित रास्ता: निमेषुलाइड के बजाय कौन सी दवाएं लें, और कैसे रहें सतर्क

अब जब निमेषुलाइड की हाई डोज बंद हो गई, तो विकल्प ढूंढ़ना जरूरी है। बुखार के लिए पैरासिटामॉल (जैसे क्रोसिन या कैलपोल) सबसे सुरक्षित है—यह लिवर पर कम असर डालती और आसानी से मिलती। दर्द या सूजन के लिए इबुप्रोफेन (बूफेन) अच्छा विकल्प, जो 400 mg तक ले सकते हैं, लेकिन डॉक्टर की सलाह से। डाइक्लोफेनाक (वोल्टारेन) जोड़ों के दर्द में मददगार,

लेकिन पेट के लिए सावधानी बरतें। सेलेकोक्सिब जैसी नई दवाएं लिवर पर कम रिस्क वाली हैं। घरेलू उपाय जैसे अदरक की चाय या गर्म सेक भी बुखार-दर्द में राहत देते। डॉक्टर कहते हैं, दवा लेने से पहले हमेशा परामर्श लें—खासकर अगर अन्य दवाएं ले रहे हों। सोशल मीडिया पर यूजर्स सलाह दे रहे कि बिना प्रिस्क्रिप्शन दवा न लें, और लिवर चेकअप करवाएं। यह बदलाव हमें सिखाता है कि सेहत के लिए स्मार्ट चॉइस जरूरी। क्या हम अब डॉक्टर पर भरोसा करेंगे, या पुरानी आदतें छोड़ेंगे? सतर्क रहें, तो कोई खतरा नहीं।

बैन का लंबा असर: मरीजों से लेकर बाजार तक, क्या बदलेगा भविष्य

यह बैन न सिर्फ मरीजों को प्रभावित करेगा, बल्कि दवा उद्योग को भी झकझोरेगा। छोटी कंपनियां जो निमेषुलाइड बनाती थीं, उन्हें नुकसान होगा, लेकिन बड़ी कंपनियां विकल्पों पर शिफ्ट हो रही। डॉक्टरों को नई गाइडलाइंस फॉलो करनी पड़ेंगी, और मरीजों को आदत बदलनी होगी। सोशल मीडिया पर बहस छिड़ी है—कुछ इसे देर का फैसला कहते, तो कुछ सराहना कर रहे। भविष्य में दवा नियंत्रण सख्त हो सकता, जो अच्छा संकेत। लेकिन सवाल बाकी—क्या हम जागरूक रहेंगे? यह बैन एक सबक है: सेहत पहले, राहत बाद में।

10 मिनट की होड़ में जिंदगी दांव पर: स्विगी-जोमैटो-ब्लिंकिट के डिलीवरी पार्टनर्स की हड़ताल ने खोली मजबूरियों की किताब

दिसंबर 2025 में भारत भर में गुंजी डिलीवरी वर्कर्स की हड़ताल ने एक बार फिर गिग इकोनॉमी की काली सच्चाई सामने ला दी। 25 दिसंबर और 31 दिसंबर को स्विगी, जोमैटो, ब्लिंकिट, जेप्टो, अमेजन और फ्लिपकार्ट जैसे प्लेटफॉर्म के करीब 2 लाख से ज्यादा वर्कर्स ने काम बंद कर दिया। यह हड़ताल इंडियन फेडरेशन ऑफ ऐप-बेस्ड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स यूनियन (IFAT) और ट्रेड यूनियन ग्रुप ऑफ वर्कर्स यूनियन (TGPWU) जैसे संगठनों ने बुलाई थी। वजह? घटती कमाई, लंबे काम के घंटे और असुरक्षित हालात। वर्कर्स कहते हैं कि 10 मिनट में डिलीवरी का वादा उनकी जिंदगी को जोखिम में डाल रहा है। 25 दिसंबर को दिल्ली, मुंबई, बैंगलोर और हैदराबाद जैसे शहरों में 40 हजार से ज्यादा पार्टनर्स ने हिस्सा लिया, जिससे 50-60 फीसदी ऑर्डर्स प्रभावित हुए। लेकिन 31 दिसंबर को न्यू ईयर ईव पर कंपनियों ने इंसेंटिव बढ़ाकर हड़ताल को कमजोर करने की कोशिश की। फिर भी, वर्कर्स की आवाज बुलंद रही। वे मांग रहे हैं कि 10 मिनट डिलीवरी मॉडल बंद हो, पुरानी पेमेंट स्ट्रक्चर वापस आए और अकाउंट ब्लॉकिंग पर रोक लगे। यह हड़ताल सिर्फ एक दिन की नहीं, बल्कि सालों की जमा नाराजगी का फल है। गिग वर्कर्स, जो शहरों की रीढ़ हैं, अब सवाल उठा रहे हैं कि सुविधा के नाम पर उनकी मेहनत का क्या? एक तरफ उपभोक्ताओं को तेज डिलीवरी का लालच, दूसरी तरफ वर्कर्स की सांसें थमने का डर। यह टकराव गिग इकोनॉमी के भविष्य को सोचने पर मजबूर करता है, जहां तकनीक तेजी लाती है लेकिन इंसान की कीमत भूल जाती है। हड़ताल ने दिखाया कि वर्कर्स अकेले नहीं लड़ रहे, बल्कि पूरे सिस्टम की कमजोरियां उजागर कर रहे हैं। क्या यह बदलाव की शुरुआत है, या सिर्फ एक शोर? समय बताएगा, लेकिन वर्कर्स की एकजुटता ने साबित कर दिया कि उनकी ताकत कम नहीं।

मेहनत का हिसाब: 15-16 घंटे की दौड़, जब में सिर्फ 700 रुपये

डिलीवरी पार्टनर्स की जिंदगी एक अनकही कहानी है, जहां रोज 15-16 घंटे सड़कों पर गुजरने के बाद भी कमाई का आंकड़ा निराश करता है। 2025 के आंकड़ों के मुताबिक, करीब 50 फीसदी वर्कर्स दिन में सिर्फ 201 से 600 रुपये कमा पाते हैं, जबकि 43 फीसदी कैब ड्राइवर्स तो इससे भी कम, 500 रुपये से नीचे। जोमैटो ने 2024 में औसतन 28,000 रुपये महीना बताया, जो महीने के 30 दिन मानें तो करीब 900 रुपये प्रतिदिन बनता है, लेकिन ईंधन, बाइक की मरम्मत और खाने-पीने के बाद यह 700 रुपये के आसपास सिमट जाता है। स्विगी और ब्लिंकिट पर भी यही हाल। एक ब्लिंकिट पार्टनर ने सितंबर 2025 में 67,000 रुपये कमाए, लेकिन यह अपवाद है, ज्यादातर के लिए सच्चाई अलग। रेंडिट पर कोचिंग के एक वर्कर ने शेर किया कि फुल टाइम काम करने पर 1,200-1,500 रुपये मिलते हैं, लेकिन बाइक की मेंटेनेंस खा जाती है। हड़ताल के दौरान वर्कर्स ने बताया कि ऑर्डर प्रति 30-100 रुपये मिलते हैं, लेकिन टारगेट न मिलने पर इंसेंटिव गायब। न्यू ईयर ईव पर कंपनियों ने 120-150 रुपये प्रति ऑर्डर का ऐलान किया, लेकिन यह सिर्फ एक रात का था। वर्कर्स पूछते

हड़ताल की चिंगारी: क्यों उतरे सड़कों पर लाखों डिलीवरी बाँयज?



हैं, बाकी दिन क्या? लंबे घंटे काम करने से थकान बढ़ती है, परिवार से वक्त नहीं मिलता। एक पार्टनर ने कहा, “रोज सुबह 8 बजे निकलता हूँ, रात 12 बजे लौटता हूँ, लेकिन घर का चूल्हा जलाने लायक पैसे नहीं बचते।” यह कमाई का फर्क अमीर-गरीब की खाई को और गहरा करता है। कंपनियां कहती हैं कि औसत कमाई बढ़ी है, लेकिन जमीनी हकीकत उलट। हड़ताल ने यह सवाल खड़ा किया कि क्या गिग जॉब्स असल में अवसर हैं या मजबूरी? वर्कर्स की यह लड़ाई न सिर्फ पैसे की, बल्कि सम्मान की भी है। अगर सुधार न हुए, तो भविष्य में और बड़ी चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं।

10 मिनट का जाल: तेजी की कीमत चुकाएं डिलीवरी बाँयज

10 मिनट डिलीवरी का जुमला ग्राहकों को लुभाता है, लेकिन वर्कर्स के लिए यह मौत का फंदा बन गया है। 2025 में ब्लिंकिट, जेप्टो और स्विगी जैसे प्लेटफॉर्म ने इस मॉडल को जोर-शोर से बढ़ावा दिया, लेकिन हड़ताल ने खोला कि यह कितना खतरनाक है। यूनियंस की मांग साफ है- इस ऑप्शन को हटा दो, क्योंकि रश में एक्सीडेंट बढ़ रहे हैं। सीएनएन की रिपोर्ट कहती है कि 2 लाख से ज्यादा वर्कर्स ने न्यू ईयर पर हड़ताल की, वजह यही दबाव। सड़कों पर बाइक दौड़ाते हुए ट्रैफिक तोड़ना, लिफ्ट में दौड़ लगाना- सब कुछ टाइम के दबाव में। एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2025 में गिग वर्कर्स के एक्सीडेंट 20 फीसदी बढ़े, ज्यादातर 10 मिनट टारगेट की वजह से। वर्कर्स बताते हैं कि ऐप पर मैप गलत दिखाता है, ग्राहक ऊपरी मंजिल पर रहते हैं, फिर भी पेनल्टी लगती है। हिंदू अखबार ने लिखा कि यह मॉडल वर्कर्स की डिगिटी और सेफ्टी पर हमला है। कंपनियां कहती हैं कि डार्क स्टोर्स और टेक्नोलॉजी से

यह संभव है, लेकिन जमीनी स्तर पर पार्टनर ही भुगतते हैं। जोमैटो के फाउंडर दीपेंद्र गोयल ने कहा कि 10 मिनट मॉडल सेफ है, लेकिन यूनियन प्रेसिडेंट ने इसे ‘टाइम टैक्स ऑन सेफ्टी’ बताया। हड़ताल के दौरान हैदराबाद और मुंबई में कई जगह सड़कों पर प्रदर्शन हुए, जहां वर्कर्स ने बैनर दिखाए- ‘स्पीड नॉट एट द कास्ट ऑफ लाइव्स’। यह दबाव सिर्फ शारीरिक नहीं, मानसिक भी है। थकान से फैमिली लाइफ बर्बाद, हेल्थ प्रॉब्लम्स बढ़ रही। उपभोक्ता सुविधा चाहते हैं, लेकिन क्या इसके लिए वर्कर्स की जिंदगी दांव पर? यह सवाल समाज को झकझोरता है। अगर 10 मिनट का वादा जारी रहा, तो हादसे और बढ़ेंगे। वर्कर्स की यह लड़ाई सेफ्टी के लिए है, जो हर नागरिक का हक है।

कंपनियों की चाल: इंसेंटिव का लालीपाप, हड़ताल का असर कम

हड़ताल की धमकी से घबराई कंपनियों ने न्यू ईयर ईव पर इंसेंटिव का तीर चलाया, लेकिन क्या यह स्थायी समाधान है? स्विगी, जोमैटो और ब्लिंकिट ने पीक ऑवर्स में 120-150 रुपये प्रति ऑर्डर का वादा किया, जिससे 31 दिसंबर को रिकॉर्ड 75 लाख ऑर्डर्स डिलीवर हुए। टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक, हड़ताल का असर न के बराबर पड़ा, क्योंकि ज्यादातर पार्टनर्स ने कमाई के लालच में काम जारी रखा। जोमैटो के सीईओ ने कहा कि प्लेटफॉर्म अनएफेक्टिव रहे, बिरयानी और पिज्जा टॉप पर थे। लेकिन यूनियंस का कहना है कि यह सिर्फ एक रात का खेल था। फोर्ब्स इंडिया ने रिपोर्ट किया कि स्पेशल इंसेंटिव और लेटर्स से स्ट्राइक कमजोर हुई। 25 दिसंबर को कुछ शहरों में डिसरप्शन हुआ, लेकिन 31 को नहीं। वर्कर्स के सोशल मीडिया पोस्ट्स दिखाते हैं कि कुछ ने हड़ताल ठुकराई, क्योंकि ‘फैमिली की जरूरतें

पूरी न होंगी’। फिर भी, हड़ताल ने कंपनियों को सोचने पर मजबूर किया। अमेजन और फ्लिपकार्ट ने भी इश्योरेंस और ग्रीवांस सिस्टम सुधारने का वादा किया। लेकिन सवाल वही- क्या ये वादे कागज पर ही रहेंगे? इकोनॉमिक टाइम्स के अनुसार, कंपनियां 10 मिनट मॉडल पर अड़ी हैं, जो वर्कर्स के लिए खतरा। उपभोक्ताओं को फायदा हुआ, लेकिन वर्कर्स की नाराजगी बरकरार। यह बैलेंस दिखाता है कि मार्केट फोर्सेस मजबूत हैं, लेकिन वर्कर्स की एकजुटता भी कम नहीं। हड़ताल का असर कम हुआ, लेकिन मैसेज साफ गया- सुधार जरूरी हैं। कंपनियां अगर सुनेंगी, तो गिग इकोनॉमी मजबूत बनेगी, वरना और बड़ी टकराव हो सकती है।

भविष्य की उम्मीद: गिग वर्कर्स की आवाज बनेगी नीति का आधार?

हड़ताल खत्म हुई, लेकिन सवाल बाकी हैं- क्या गिग इकोनॉमी में बदलाव आएगा? 2025 की यह घटना दिखाती है कि वर्कर्स अब चुप नहीं रहेंगे। यूनियंस मांग रही हैं कि सरकार स्ट्रॉन्ग रेगुलेशंस लाए- न्यूनतम वेतन, हेल्थ इश्योरेंस, पेंशन और सेफ्टी स्टैंडर्ड्स। प्रोग्रेसिव इंटरनेशनल की रिपोर्ट कहती है कि यह स्ट्राइक डिगिटी और प्रोटेक्शन की लड़ाई है। कंपनियां कहती हैं कि वे पार्टनर्स को सपोर्ट करती हैं, लेकिन आंकड़े उलट बोलते हैं। क्विंट की रिपोर्ट में 2 लाख वर्कर्स ने फेब्रुअरी और सोशल सिक्योरिटी की मांग की। अगर सुधार हुए, तो लाखों जिंदगियां बेहतर होंगी। उपभोक्ता भी सोचें- तेज डिलीवरी के पीछे इंसानी कीमत क्या? हड़ताल ने बहस छेड़ी कि तकनीक कैसे इंसान-केंद्रित बने। आगे की राह लंबी है, लेकिन वर्कर्स की ताकत ने उम्मीद जगाई। क्या 2026 में नई पॉलिसी आएगी? समय जवाब देगा, लेकिन यह साफ है कि बदलाव की बुनियाद पड़ चुकी है।

विध्वंस की शताब्दी

इस शताब्दी के आगमन पर
काल प्रवाह ने मनुष्य देख,

तुझे क्या बना दिया है।
मैं अपनी आहुति देता हूँ।

मैं मर गया हूँ और
मेरे श्राद्ध पर अनादरपूर्वक आमंत्रित हैं

सब जीव-जंतु, पुष्प और पत्थर।
मेरे देवताओं, पीछे मत छूट जाना।

ऐसा इसलिए हूँ क्योंकि तुमने ऐसा बनाया है।
मैं रुखसत लेता हूँ अपने अनुग्रहों से,

वासना, लोभ और आत्मरक्षा के व्यर्थ विन्यासों से
और अपने किंचित् व्यय से।

शुरू में कुछ नहीं था।
फिर हिंसा आई,

रक्त की लाल साड़ी पहने।
हमारे समय में सफलता की शादी हो रही है

आओ हिंसक पुरुषों और बर्बर राजनेताओं,
समय उपयुक्त है और यह समय ऐसा हमेशा से था,
याद रखना।

तुमने इसे भी नहीं बनाया है।
तुम भोले जानवरों को भी

मूर्ख नहीं बना पाए हो।
लेकिन यह सही है

कि श्मशान अब नए उद्यान बन गए हैं।
मुझे सड़क से डर लगता है

जहाँ इतने सारे मनुष्य
और जीव और अपमानित अनुभूतियाँ रहती हैं।

गाड़ी की खिड़की के बाहर
हम सब में समय और आकांक्षा और प्रतिद्वंद्विता

और विफल सपनों के भीतर मर्यादाहीन लिप्सा,
क्रूरता और अहंकार,

(पंक्ति तके अंत में खड़े हो जाएँ,
जैसे पता ही है आपको)

यहाँ अपमान समय लेकर हो पाता है।)
और महाभारत के यक्ष और स्तब्ध गायें

औ लाचार महिलाएँ और बनावटी चित्रकार...
कुर्ता नया प्रचलन है,

कविता हो न हो कुर्ता होना चाहिए,
कविता का यह सत्य है।

संकोच की तरह सच,
प्रमाण की तरह सच,

आदर की तरह सच,
दुःख की तरह सच,

झूठ की तरह सच।
बोलो कि मैं निर्दोष हूँ

और फिर और जोर से बोलो
क्योंकि जेल के अंदर की

पिट्टाई दिमाग में होना शुरू हो गई है।
परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओ

क्योंकि सफलता या कम से कम सफलता की
गुंजाइश
परीक्षा का कवच पहने खड़ी है,

संभोग कवच उतार कर लेगा।
हिंसा के बाद मशीन आई

और अनंतकाल से बेखबर मनुष्य को
पता चला पहली बार कि वह बेखबर था।

अच्छा हुआ कि खुशी का जादू
लंबी गाड़ी और अच्छे जूतों में मिल गया।

आखिर गांधी और बुद्ध और युधिष्ठिर
आत्म-प्रश्न में डूबे ही थे,

क्या मिल गया?
जूते की चमक के ऊपर

टेसू के पेड़ में
फूल नहीं अँतड़ियाँ और गुर्दे

उग रहे हैं।
इन्हें निचोड़ लेते हैं।

होली आने वाली है।
जब जमीन पर हाथ रखते हैं बुद्ध हर बार,

तो वह पूछती है यदि सत्य है
तो पूछते क्यों हो।

क्योंकि मैंने कोशिश की है
और समझ नहीं पाया हूँ

कि फल और कर्म क्यों मिल जाते हैं
मनुष्य के सपने में।

क्योंकि मैं नहीं समझ पाता कि जीवन की
अर्थहीनता सहते हुए भी रोजमर्रा की निराशा क्यों
तोड़ देती है,

क्योंकि मृत लोगों की आकांक्षाओं का भार भी
न उठा पाने के कष्ट को संतोष से

हँकना कठिन हो रहा है।
अपनी उम्हों के टोकरे को

सिकोड़ कर मैंने अंगूर बना दिया है
वह जब सड़ जाएगा, तो इसकी शराब पीते हुए

देखूँगा कि क्या दूसरे भाग गए हैं
यह करुकर—‘पता नहीं ऐसा क्यों हुआ?’

मुझे बेचारा मत कहो बेचारो,
मुझे मृत कहो।

मृत्यु ही पिछली शताब्दी की
सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है,

तुम रुककर देखो अपने दुःख दूसरों के आँसुओं में
और जानो कि परिष्कार यही है।

हिंसा की मशीन बिजली जाने पर,
और तेज चलती है।

अकारण विषययुद्धों में
करोड़ों का नरसंहार वह खेल था

जो प्रकृति ने रचा था,
यह बतलाने के लिए कि मूलतः

कुछ नहीं बदलता और मनुष्य
हर क्षण बदलता रहता है।

मशीन के बाद शक्ति आई
और याद रखो कि सत्य को जो मार पाए

वह बड़ा सत्य होता है।
हमें एतराज है उन लोगों से

क्योंकि वे अलग सोचते हैं।
हिम्मत का प्याला सबसे पहले हमारे पास आ गया था

और हमने ही सबसे ज्यादा पिया है।
ज्ञान वही है जो हमें हो, प्रेम वही जो हमसे हो

क्योंकि लोग यदि मुझे पसंद करेंगे
तो मैं सच हूँ।

या कम से कम वह हूँ
जो सच का उत्स है, आधार हैं,

जैसे सूरज रोशनी का इस ब्रह्मांड में।
मुझे नहीं पता सच क्या है,

हो सकता है आपको भी न पता हो
इसलिए धर्म और कानून और विज्ञान का विष

सुकरात को पिला देते हैं।
आखिर प्रश्न से बड़ा है संदेह।

अनिश्चित अंतःकरण से बड़ा है आत्मविश्वास।
रात में आसमान अँधेरे में नहीं खिलता,

नए बल्ब से सब जगमगा जाता है।
तिलक प्रश्न पूछते हैं कि क्या मेरा

खामोश बलिदान चाहिए
मेरे देश को?

हम उत्तर देते हैं
कि यह काफ़ी है

वैसे भी हम खुश हैं।
सम्यता जाए चूले में।

आस्तीक वाजपेयी

नई पीढ़ी के कवि-लेखक। भारतभूषण
अब्रवाल पुरस्कार और साहित्य अकादेमी के
युवा पुरस्कार से सम्मानित।

वेनेजुएला की रात, अमेरिका का ऑपरेशन और मादुरो की गिरफ्तारी सत्ता, युद्ध और अनिश्चित भविष्य की पूरी कहानी

@ मनीष पांडेय

का राकस की रात आम दिनों जैसी नहीं थी। घड़ी में जब समय आगे बढ़ रहा था, तब आसमान में गूँजते धमाकों ने वेनेजुएला को जगा दिया। भारतीय समय के मुताबिक शनिवार सुबह करीब 11:30 बजे अमेरिका ने वेनेजुएला के चार बड़े शहरों पर एक साथ सैन्य कार्रवाई की। निशाने पर थे सैन्य ठिकाने, रणनीतिक इमारतें और वे इलाके जिन्हें अमेरिका ने खास टारगेट बताया। कुछ ही घंटों बाद दुनिया उस दावे से चौंक गई जिसने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भूचाल ला दिया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कहा कि वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस अब अमेरिकी सैनिकों की हिरासत में हैं। ट्रम्प के मुताबिक दोनों को वेनेजुएला से बाहर ले जाया जा चुका है और इस पूरे ऑपरेशन की जानकारी वे सुबह 11 बजे प्रेस कॉन्फ्रेंस में देंगे। यह खबर फैलते ही वेनेजुएला से लेकर वॉशिंगटन, मॉस्को, बीजिंग और लंदन तक हलचल मच गई।



हमले से पहले की पृष्ठभूमि

अमेरिका और वेनेजुएला के रिश्ते लंबे समय से तनावपूर्ण रहे हैं। अमेरिका का आरोप रहा है कि मादुरो सरकार लोकतांत्रिक मूल्यों को कुचल रही है, मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रही है और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन चुकी है। अमेरिकी प्रशासन यह भी दावा करता रहा है कि वेनेजुएला से अमेरिका के खिलाफ साजिशें रची जा रही थीं। इसी पृष्ठभूमि में यह सैन्य कार्रवाई सामने आई। अमेरिका ने साफ किया कि यह हमला किसी देश पर कब्जा करने के लिए नहीं, बल्कि एक “खतरनाक शासन” को खत्म करने के लिए किया गया।

इमरजेंसी और पलटती कहानी

अमेरिकी हमले के तुरंत बाद राष्ट्रपति मादुरो ने राष्ट्र के नाम संदेश जारी किया। उन्होंने कहा कि वेनेजुएला जवाब देगा और देशभर में इमरजेंसी लागू करने का ऐलान किया। जनता से शांति बनाए रखने की अपील की गई और सेना को हाई अलर्ट पर रखा गया। लेकिन मादुरो के बयान के ठीक एक घंटे बाद ट्रम्प का पोस्ट सामने आया, जिसमें मादुरो की गिरफ्तारी का दावा किया गया। यहीं से कहानी ने नया मोड़ ले लिया। वेनेजुएला सरकार ने कहा कि उन्हें राष्ट्रपति और उनकी पत्नी के ठिकाने की जानकारी नहीं है, जबकि अमेरिका ने उन्हें अपने कब्जे में होने का दावा दोहराया।

अमेरिका के हमले की तीन बड़ी वजहें

अमेरिका ने इस कार्रवाई के पीछे तीन मुख्य कारण गिनाए। पहला कारण अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा बताया गया। अमेरिका का कहना है कि वेनेजुएला की सरकार दुनिया के लिए खतरा बन चुकी थी। दूसरा कारण लोकतंत्र और मानवाधिकार हैं। अमेरिकी प्रशासन के मुताबिक वेनेजुएला में लोकतंत्र लगभग खत्म हो चुका था और आम लोगों पर अत्याचार बढ़ रहे थे। तीसरा आरोप सीधे मादुरो पर है। अमेरिका का दावा है कि वे अवैध गतिविधियों और

हिंसा को बढ़ावा दे रहे थे।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने साफ कहा कि ब्रिटेन इस सैन्य कार्रवाई में शामिल नहीं था। उन्होंने कहा कि वे इस मुद्दे पर राष्ट्रपति ट्रम्प से बात करेंगे और उनका मानना है कि सभी देशों को अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन करना चाहिए।

अमेरिका का पुराना इतिहास

यह पहली बार नहीं है जब अमेरिका ने किसी देश के राष्ट्रपति को सैन्य कार्रवाई के जरिए पकड़ा हो। 1989 में पनामा पर हमला कर अमेरिका ने तानाशाह मैनुअल नोरिएगा को गिरफ्तार किया था। उस ऑपरेशन में भारी तबाही हुई और करीब दो हजार लोगों की जान गई। 2003 में इराक पर हमला कर सद्दाम हुसैन की सत्ता खत्म की गई। बाद में सद्दाम को पकड़कर इराक की अदालत में पेश किया गया। अब वेनेजुएला तीसरा ऐसा देश बन गया है, जहां अमेरिका ने इसी तरह का दावा किया है।

चीन और दुनिया की चिंता

चीन ने अपने नागरिकों को वेनेजुएला न जाने की सलाह दी है। जो लोग पहले से वहां हैं, उनसे सतर्क रहने को कहा गया है। चीनी विदेश मंत्रालय ने आपात स्थिति में स्थानीय पुलिस और दूतावास से संपर्क करने की अपील की है। रूस ने इस हमले को सशस्त्र हमला बताते हुए कड़ी निंदा की। रूस ने कहा कि इससे हालात और बिगड़ सकते हैं और सभी पक्षों को संयम बरतना चाहिए। क्यूबा ने भी अमेरिका पर संप्रभुता के उल्लंघन का आरोप लगाया और इसे स्टेट टेरिज्म बताया। मादुरो की गिरफ्तारी के दावे के बाद विपक्षी नेता मारिया कोरीना मचाडो फिर सुर्खियों में हैं। उन्हें 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार मिला था। 2024 के चुनाव के बाद से वे छिपकर रह रही थीं और आखिरी बार दिसंबर में नॉर्वे में देखी गई थीं। मचाडो लंबे समय से मादुरो के खिलाफ अमेरिकी सख्त रुख का समर्थन करती रही हैं। उनका मानना रहा



है कि वेनेजुएला में कम्युनिस्ट शासन को खत्म करने के लिए अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप जरूरी है।

वायरल तस्वीर और DEA

सोशल मीडिया पर एक तस्वीर तेजी से वायरल हो रही है, जिसमें DEA के अधिकारी मादुरो को पकड़कर ले जाते दिख रहे हैं। DEA अमेरिका की ड्रग एनफोर्समेंट एजेंसी है, जो ड्रग तस्करी और अवैध गतिविधियों के खिलाफ काम करती है। हालांकि इस तस्वीर की आधिकारिक पुष्टि को लेकर सवाल उठ रहे हैं। अब आगे क्या। वेनेजुएला का भविष्य इस वक्त सबसे बड़ा सवाल है। संविधान के मुताबिक अगर राष्ट्रपति पद खाली होता है, तो उपराष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज सत्ता संभालेंगी और 30 दिनों के भीतर चुनाव होंगे। दूसरा रास्ता सरकार के पूरी तरह गिरने का है, जिसमें विपक्ष सत्ता संभाल सकता है। विपक्षी नेता एडमंडो गोंजालेज खुद को असली राष्ट्रपति मानते हैं।

तीसरा और सबसे खतरनाक रास्ता सेना का हस्तक्षेप है। रक्षा मंत्री व्लादिमीर पाद्रिनो लोपेज ने कहा है कि विदेशी सैनिकों की मौजूदगी वेनेजुएला के लिए अपमान है। गृहमंत्री डियोसदादो काबेलो ने जनता से हिम्मत न हारने की अपील की है। उन्होंने कहा कि कोई भी ऐसा कदम न उठाए जिससे देश के दुश्मनों को फायदा मिले। अमेरिकी सीनेटर माइक ली ने कहा है कि मादुरो पर अमेरिका में मुकदमा चलाया जाएगा। उनके मुताबिक यह गिरफ्तारी अमेरिकी एजेंसियों ने की और इसे सुरक्षित बनाने के लिए सैन्य कार्रवाई जरूरी थी। वेनेजुएला आज इतिहास के सबसे नाजुक मोड़ पर खड़ा है। एक तरफ सत्ता का खालीपन है, दूसरी तरफ विदेशी ताकतों का दबाव। यह साफ नहीं है कि आने वाले दिन लोकतंत्र लेकर आएंगे या देश और गहरे संकट में डूबेगा। एक बात तय है। वेनेजुएला की यह रात सिर्फ एक सैन्य ऑपरेशन नहीं थी, बल्कि एक ऐसे अध्याय की शुरुआत है, जिसका असर पूरी दुनिया महसूस करेगी।

ममता का मंदिर दांव: 'सॉफ्ट हिंदुत्व' की चाल में छिपा 2026 का चुनावी फॉर्मूला?

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इन दिनों मंदिरों के निर्माण और उद्घाटन में जोर दे रही हैं, जो राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बन गया है। दिसंबर 2025 के आखिर में, उन्होंने कोलकाता के न्यू टाउन में दुर्गा आंगन नामक एक बड़े मंदिर परिसर का शिलान्यास किया, जहां मां दुर्गा को समर्पित मंदिर के साथ-साथ सांस्कृतिक केंद्र भी बनेगा। इससे पहले अप्रैल 2025 में उन्होंने जगन्नाथ मंदिर का उद्घाटन किया था, और हाल ही में सिलीगुड़ी में महाकाल मंदिर बनाने की घोषणा की, साथ ही गंगासागर में पुल का प्लान भी पेश किया। ममता ने कहा कि यह सब बंगाली संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए है, न कि किसी वोट बैंक को खुश करने के लिए। लेकिन विपक्षी दल बीजेपी इसे 'सॉफ्ट हिंदुत्व' की चाल बता रहे हैं, यानी हिंदू वोटों को नरमी से अपने पाले में लाने की कोशिश। वास्तव में, 2021 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी ने हिंदुत्व के मुद्दे पर अच्छा प्रदर्शन किया था, और अब 2026 के चुनाव नजदीक आते ही ममता सरकार लगता है कि हिंदू मतदाताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकती। दुर्गा पूजा को लेकर राज्य सरकार ने अनुदान भी बढ़ाया है, जो पहले 50 हजार रुपये से अब 1 लाख रुपये तक हो गया है। यह कदम बंगाल की परंपरागत पूजा-अर्चना को जोड़ता है, लेकिन सवाल उठता है कि क्या यह सिर्फ सांस्कृतिक प्रयास है या चुनावी रणनीति? ममता ने शिलान्यास के दौरान मां दुर्गा का आह्वान किया और कहा कि वह सच्ची धर्मनिरपेक्ष हैं, लेकिन आलोचक कहते हैं कि यह हिंदू भावनाओं को छूने का तरीका है। बंगाल में हिंदू आबादी करीब 70 प्रतिशत है, और पिछले चुनावों में बीजेपी ने राम मंदिर जैसे मुद्दों पर वोट बटोरे थे। अब टीएमसी को लगता है कि मंदिरों के जरिए वे इस धार को कमजोर कर सकती हैं। कुल मिलाकर, ये कदम ममता की छवि को मजबूत करने के साथ-साथ बीजेपी की हिंदुत्व वाली राजनीति को चुनौती देते हैं। लेकिन क्या यह रणनीति काम करेगी, यह तो वक्त बताएगा।

'सॉफ्ट हिंदुत्व' का मतलब: ममता की राजनीतिक चालाकी

ममता बनर्जी का यह मंदिरों पर जोर देना 'सॉफ्ट हिंदुत्व' कहल रहा है, जो बीजेपी के कट्टर हिंदुत्व से अलग, नरम रूप में हिंदू भावनाओं को अपील करता है। राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि यह टीएमसी की चुनावी रणनीति का हिस्सा है, क्योंकि 2026 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी फिर से हिंदू वोटों पर दांव लगाएगी। ममता ने हमेशा खुद को धर्मनिरपेक्ष नेता बताया है, लेकिन अब वे मंदिर बनवाकर और पूजा समितियों को मदद देकर हिंदू समुदाय को संदेश दे रही हैं कि उनकी सरकार सबका साथ निभाती है। उदाहरण के तौर पर, दुर्गा आंगन परियोजना को दुनिया का सबसे बड़ा दुर्गा मंदिर परिसर बताया जा रहा है, जो बंगाल की सांस्कृतिक विरासत को जोड़ेगा। यह चाल इसलिए स्मार्ट है क्योंकि बीजेपी मंदिरों का विरोध नहीं कर सकती, वरना खुद को हिंदू-विरोधी साबित कर देगी। टीएमसी के अंदरूनी स्रोतों के मुताबिक, यह कदम बीजेपी के हिंदुत्व हथियार को

हालिया मंदिरों की होड़: ममता का नया रुख



कुंद करने के लिए है, खासकर उन इलाकों में जहां हिंदू मतदाता टीएमसी से नाराज चल रहे हैं। साथ ही, ममता मुस्लिम वोट बैंक को भी संभाल रही हैं, जैसे कि SIR मौतों का जिक्र करके वोटिंग अधिकारों की बात करना। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह बैलेंसिंग एक्ट लंबे समय तक चलेगा? राजनीतिक विश्लेषक कहते हैं कि बंगाल की राजनीति में पहचान की राजनीति हमेशा से महत्वपूर्ण रही है, और ममता अब बंगाली अस्मिता को हिंदू परंपराओं से जोड़ रही हैं। यह न सिर्फ वोटों को एकजुट करेगा, बल्कि बीजेपी की आक्रामक शैली के मुकाबले एक सॉफ्ट इमेज देगा। कुल मिलाकर, यह चाल ममता की राजनीतिक समझ को दिखाती है, जो कट्टरता से बचते हुए सांस्कृतिक अपील पर टिकी है। लेकिन अगर यह उल्टा पड़ा, तो टीएमसी को मुस्लिम वोट खोने का खतरा भी है।

बीजेपी की नाराजगी: ममता पर तीखे हमले

बीजेपी ने ममता के इन मंदिर कदमों को जोरदार तरीके से निशाना बनाया है, कहते हुए कि यह महज चुनाव से पहले का दिखावा है। पार्टी के नेता अधिकारी ने कहा कि ममता अब 'सॉफ्ट हिंदुत्व' की आड़ में वोट मांग रही हैं, लेकिन असल में वे हिंदू विरोधी रही हैं। बीजेपी का तर्क है कि अगर ममता को मंदिरों से इतना प्यार है, तो राम मंदिर का समर्थन क्यों नहीं किया? इसके अलावा, वे आरोप लगाते हैं कि टीएमसी सरकार करदाताओं के पैसे से धार्मिक काम कर रही है, जबकि उद्योग और रोजगार पर ध्यान कम है। विपक्ष का कहना है कि यह 'अपनी ही दुकान में आग लगाने' जैसा है, क्योंकि बीजेपी पहले से ही हिंदुत्व पर मजबूत है, और ममता का यह प्रयास उल्टा उनके लिए फायदा साबित हो सकता है। बंगाल में

बीजेपी के 77 विधायक हैं, और वे 2026 में 200 सीटों का लक्ष्य रखे हुए हैं। ममता के महाकाल मंदिर प्लान पर भी बीजेपी ने सवाल उठाए कि यह महज कॉपी-पेस्ट है, जैसे कि उज्जैन का महाकालेश्वर। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि बीजेपी मंदिरों का विरोध नहीं कर रही, बल्कि इसे 'अनुकरण' बता रही है। राजनीतिक जानकारों के मुताबिक, यह बीजेपी के लिए दुविधा पैदा कर रहा है, क्योंकि वे न तो समर्थन कर सकते हैं और न ही विरोध। कुल मिलाकर, बीजेपी ममता को 'अपसीजमेंट' का आरोप लगाकर मुस्लिम वोटों को भड़काने की कोशिश कर रही है, लेकिन ममता ने जवाब दिया कि वे किसी को खुश करने के लिए नहीं, बल्कि संस्कृति के लिए काम कर रही हैं। यह टकराव 2026 चुनावों को और रोचक बना देगा।

टीएमसी का बचाव: धर्मनिरपेक्षता और बैलेंस का खेल

टीएमसी का कहना है कि ममता के मंदिर कदम बंगाल की सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने के लिए हैं, न कि हिंदुत्व की राजनीति के लिए। पार्टी प्रवक्ता कहते हैं कि दुर्गा पूजा बंगाल की पहचान है, और सरकार इसे बढ़ावा देना उसका कर्तव्य है। ममता ने स्पष्ट कहा, 'मैं किसी को खुश करने के लिए नहीं कर रही, मैं सच्ची धर्मनिरपेक्ष हूँ।' साथ ही, वे मुस्लिम कल्याण योजनाओं पर भी जोर दे रही हैं, जैसे कि SIR मौतों का जिक्र करके वोटिंग अधिकारों की मांग। यह बैलेंसिंग एक्ट टीएमसी की ताकत है, जो बंगाल की विविध आबादी को ध्यान में रखती है। लेकिन आलोचक कहते हैं कि यह देर से आया कदम है, क्योंकि बीजेपी ने पहले ही हिंदू वोटों पर कब्जा जमा लिया है। टीएमसी के 28 साल पूरे होने पर पार्टी ने पहचान की राजनीति को नया

रूप दिया, बंगाली गौरव को हिंदू परंपराओं से जोड़कर। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह मुस्लिम मतदाताओं को दूर नहीं करेगा? राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि ममता का यह रुख बीजेपी की आक्रामकता के खिलाफ एक स्मार्ट जवाब है, जो सॉफ्ट अप्रोच से वोट जोड़ेगा। कुल मिलाकर, टीएमसी धर्मनिरपेक्षता की लकीर पर चलते हुए सांस्कृतिक अपील कर रही है, जो लंबे समय में फायदेमंद साबित हो सकता है।

2026 का चुनावी मैदान: मंदिर रणनीति बदलेगी तस्वीर?

2026 के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में ममता की मंदिर रणनीति बड़ा रोल अदा कर सकती है, जो हिंदू वोटों के बंटवारे को रोकने की कोशिश है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि अगर टीएमसी यह सॉफ्ट हिंदुत्व जारी रखे, तो बीजेपी का हिंदुत्व एज कमजोर पड़ सकता है। बंगाल में 294 सीटें हैं, और 2021 में टीएमसी ने 213 जीतीं, लेकिन बीजेपी 77 पर सिमट गई। अब नई चुनौतियां जैसे बेरोजगारी और प्रवासी मजदूरों की मौतें हैं, लेकिन पहचान के मुद्दे हावी रहेंगे। ममता के गंगासागर पुल जैसे प्रोजेक्ट तीर्थयात्रियों को आकर्षित करेंगे, जो हिंदू वोटों को प्रभावित करेगा। दूसरी तरफ, बीजेपी राष्ट्रीय मुद्दों जैसे राम मंदिर को जोड़कर हमला बोलेगी। लेकिन ममता की लोकप्रियता, खासकर महिलाओं और ग्रामीण इलाकों में, उनकी ढाल बनेगी। क्या यह रणनीति सफल होगी? शायद हां, अगर टीएमसी मुस्लिम-हिंदू बैलेंस बनाए रखे। कुल मिलाकर, यह चुनाव पहचान और विकास के बीच की जंग होगी, जहां ममता का मंदिर दांव निर्णायक साबित हो सकता है।

सुप्रीम कोर्ट से उमर खालिद और शरजील इमाम को झटका, जमानत से इनकार

शीर्ष अदालत ने कहा-एक साल तक नई बेल याचिका नहीं, 5 अन्य आरोपियों को सशर्त राहत

@ अभिषेक चौबे

20 के दिल्ली दंगों से जुड़े बहुचर्चित मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को अहम फैसला सुनाया। अदालत ने मुख्य आरोपियों में शामिल उमर खालिद और शरजील इमाम को जमानत देने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं, शीर्ष अदालत ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि दोनों आरोपी अगले एक साल तक इस मामले में जमानत के लिए दोबारा कोई याचिका दाखिल नहीं कर सकेंगे। हालांकि, इसी केस में शामिल पांच अन्य आरोपियों को अदालत ने कड़ी शर्तों के साथ जमानत दे दी है। यह फैसला ऐसे समय आया है जब सभी आरोपी पिछले करीब पांच साल तीन महीने से तिहाड़ जेल में बंद हैं और लंबे समय से यह दलील दे रहे थे कि ट्रायल शुरू नहीं होने के कारण उनकी हिरासत अनुचित हो गई है।

किन आरोपियों पर क्या फैसला

इस मामले में उमर खालिद, शरजील इमाम, गुलफिशा फातिमा, मीरान हैदर, शिफा उर रहमान, मोहम्मद सलीम खान और शादाब अहमद आरोपी हैं। सभी पर 2020 के दिल्ली दंगों की साजिश रचने और उसे अंजाम देने के आरोप हैं। इन पर गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम यानी UAPA के तहत मुकदमा दर्ज है। सुप्रीम कोर्ट ने उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत याचिकाएं खारिज कर दीं, जबकि गुलफिशा फातिमा, मीरान हैदर, मोहम्मद समीर खान, शादाब अहमद और शिफा उर रहमान को जमानत दे दी गई। इन पांचों को करीब 12 सख्त शर्तों के साथ रिहा किया जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा?

जस्टिस अरविंद और जस्टिस एनवी अंजारिया की पीठ ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष के आरोपों और उपलब्ध सबूतों के आधार पर उमर खालिद और शरजील इमाम की भूमिका अन्य आरोपियों से अलग है। अदालत के अनुसार, कथित अपराधों में इन दोनों की भूमिका केंद्रीय यानी मुख्य मानी गई है। अदालत ने माना कि दोनों की हिरासत की अवधि लंबी रही है, लेकिन यह न तो संविधान के अनुच्छेद 21 का उल्लंघन करती है और न ही UAPA जैसे विशेष कानून के तहत लगाए गए वैधानिक प्रतिबंधों को कमजोर करती है।

अनुच्छेद 21 और UAPA पर अहम टिप्पणी

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में अनुच्छेद 21 का विशेष रूप से उल्लेख किया। अदालत ने कहा कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता संविधान में एक खास स्थान रखती है और ट्रायल से पहले जेल को सजा नहीं माना जा सकता। हालांकि, अदालत ने यह भी साफ किया कि स्वतंत्रता से वंचित करना हमेशा मनमाना नहीं होता।



अदालत ने कहा कि UAPA एक विशेष कानून है, जो यह तय करता है कि किन परिस्थितियों में ट्रायल से पहले जमानत दी जा सकती है। राज्य की सुरक्षा और अखंडता से जुड़े मामलों में सिर्फ यह तर्क कि ट्रायल में देरी हो रही है, जमानत का आधार नहीं बन सकता।

पांच आरोपियों को जमानत, लेकिन सख्त शर्तें

जिन पांच आरोपियों को जमानत दी गई है, उनके खिलाफ लगे आरोपों में कोई नरमी नहीं बरती गई है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा कि जमानत का मतलब यह नहीं है कि आरोप कमजोर हो गए हैं। अदालत ने निर्देश दिया है कि सभी पांच आरोपी करीब 12 शर्तों का पालन करेंगे। इनमें जांच और ट्रायल में पूरा सहयोग करना, गवाहों को प्रभावित न करना, देश छोड़कर न जाना और किसी भी तरह की गैरकानूनी गतिविधि में शामिल न होना शामिल है। अगर किसी भी शर्त का उल्लंघन हुआ तो ट्रायल कोर्ट को जमानत रद्द करने का पूरा अधिकार होगा।

लंबी हिरासत पर क्या बोले आरोपी

सुनवाई के दौरान आरोपियों की ओर से यह दलील दी गई कि मामले में अब तक ट्रायल शुरू नहीं हुआ है और आगे भी जल्द शुरू होने की संभावना नहीं दिखती। बचाव पक्ष ने कहा कि आरोपी पांच साल से अधिक समय से जेल में हैं, जबकि उनके खिलाफ दंगे भड़काने से जुड़ा कोई ठोस सबूत सामने नहीं आया है। आरोपियों ने यह भी कहा कि लंबी हिरासत उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है और अनुच्छेद 21 के तहत उन्हें राहत मिलनी चाहिए। दिल्ली पुलिस ने आरोपियों की जमानत याचिकाओं

का कड़ा विरोध किया। पुलिस का कहना था कि ये सभी आरोपी दिल्ली दंगों के मुख्य साजिशकर्ता हैं। पुलिस ने यह भी कहा कि सुनवाई में देरी के लिए आरोपी खुद जिम्मेदार हैं। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, अगर आरोपी सहयोग करें तो ट्रायल दो साल के भीतर पूरा किया जा सकता है। पुलिस ने यह तर्क भी दिया कि UAPA जैसे गंभीर कानून के तहत दर्ज मामलों में जमानत देने के मानदंड अलग होते हैं।

हाईकोर्ट पहले ही कर चुका था इनकार

गौरतलब है कि इससे पहले दिल्ली हाईकोर्ट ने 2 सितंबर 2025 को सभी आरोपियों की जमानत याचिकाएं खारिज कर दी थीं। हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि शुरुआती तौर पर उमर खालिद और शरजील इमाम की भूमिका गंभीर प्रतीत होती है। हाईकोर्ट ने यह भी कहा था कि इन दोनों पर सांप्रदायिक आधार पर भड़काऊ भाषण देने और भीड़ को उकसाने के आरोप हैं। हाईकोर्ट के इस फैसले को ही सभी आरोपियों ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

ट्रम्प यात्रा और दंगों की साजिश का दावा

दिल्ली पुलिस ने अदालत में यह भी दावा किया कि 2020 के दिल्ली दंगे अचानक नहीं हुए थे, बल्कि यह एक सुनियोजित और पैन-इंडिया स्तर की साजिश का हिस्सा था। पुलिस के अनुसार, इन दंगों का मकसद सत्ता परिवर्तन और आर्थिक दबाव बनाना था। पुलिस ने कहा कि नागरिकता संशोधन कानून (CAA) के विरोध को शांतिपूर्ण आंदोलन के नाम पर कट्टरपंथीकरण के लिए इस्तेमाल किया गया। पुलिस का यह भी दावा है कि

दंगों को तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की भारत यात्रा के समय अंजाम देने की योजना थी, ताकि अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान भारत की ओर खींचा जा सके।

व्हाट्सएप ग्रुप और नेटवर्क का जिक्र

पुलिस के मुताबिक, इस कथित साजिश को अंजाम देने के लिए कई व्हाट्सएप ग्रुप बनाए गए थे। दिल्ली प्रोटेस्ट सपोर्ट ग्रुप (DPSG) और जामिया अवेयरनेस कैम्पेन टीम जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया गया। पुलिस का कहना है कि इन नेटवर्क्स के जरिए विरोध को हिंसा में बदला गया। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला दिल्ली दंगा केस में अब तक का सबसे अहम कानूनी पड़ाव माना जा रहा है। एक तरफ जहां अदालत ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लंबे समय तक जेल में रहने जैसे मुद्दों पर विस्तार से टिप्पणी की, वहीं दूसरी तरफ उसने यह भी साफ कर दिया कि राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में कानून के दायरे को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उमर खालिद और शरजील इमाम को जमानत न मिलना इस बात का संकेत है कि अदालत इन पर लगे आरोपों को गंभीर मान रही है। वहीं पांच अन्य आरोपियों को सशर्त राहत देना यह दिखाता है कि हर आरोपी की भूमिका को अलग-अलग नजरिए से देखा गया है। अब इस मामले में निगाहें ट्रायल पर टिकी हैं। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी के बाद यह उम्मीद की जा रही है कि ट्रायल प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी। साथ ही, यह मामला आने वाले समय में UAPA, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लंबी हिरासत जैसे मुद्दों पर कानूनी बहस का बड़ा आधार बनेगा।



प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries